Chapter-6

अध्याय-6

ब्रजमंडल के आधुनिक कवियों के काव्य से तुलनात्मक विवेचन

षष्ठ अध्याय

ब्रजमंडल के आधुनिक कवियों के काव्य से तुलनात्मक विवेचन

भाषा का रूप समय और परिस्थितियों के अनुरूप बदलता रहा है। इसी प्रकार काव्य का क्षेत्र भी बदलता रहा है। आधुनिक युग के आते-आते ब्रजभाषा का साहित्य-कोश बहुत धीरे-धीरे वृद्धि करने लगा क्योंकि खड़ी बोली धीरे-धीरे रचनाधर्मिता में अपनी जड़ों को जमा चुकी थी। कुछ कवियों ने खड़ी बोली का डटकर विरोध किया। कवि जगन्नाथ दास रत्नाकर ने लिखा -

जात खरी बोली पै कोउ भयो दिवानौ
कोउ तुकांत बिन पद्य लिखन में है अरुझानौ।[1]
(समालोचनादर्श)

इनके अलावा कई कवियों ने विरोध किया। किन्तु इसको बदल न पाये। किन्तु वे हारे भी नहीं, वे ब्रजभाषा में सृजन करना जारी रखते हुए ब्रजकाव्य के साहित्य कोष की वृद्धि कर नयेपन को अपनाते हुए लिखते रहे।

आधुनिक युग के ब्रजमंडल कवियों ने पंरपरागत काव्य शैली को अपनाते हुए आधुनिक युग की समस्याओं, परिस्थितियों और संवेदनाओं का समावेश करते हुए ब्रजभाषा काव्य के विषय क्षेत्र में वृद्धि की। नवनीत जी, कविरत्न गोविंद जी, डॉ. जगदीश गुप्त, सोमठाकुर, श्रीधर पाठक, वियोगी हरि, हृषिकेश चतुर्वेदी और डॉ. विष्णु विराट आदि जैसे कवियों ने ब्रजभाषा काव्य की पताका को फहरा रखा है और

ब्रजसाहित्य के कोष में वृद्धि कर रहे हैं। इन्हीं कविरत्नों की साहित्यिक यात्रा पर नजर डालते है।

1. कविरत्न नवनीत जी

संवत् 1915 में मथुरा के आंगन में एक रत्न का जन्म हुआ जिसने ब्रजकाव्य क्षेत्र में अपनी चमक द्वारा रोशनी बिखेर दी। ऐसे सुपुत्र के पिता 'बूला जी' और माता 'रूढ़ी देवी' हैं। पं. गंगादत्त जी के शिष्यत्व में अपनी शिक्षा-दीक्षा प्राप्त की जहाँ विविध ग्रन्थों का अध्ययन किया और बचपन से ही काव्य सृजन में दिलचस्पी रखने लगे।

इनकी मुख्य रचनाएं हैं - श्यामांगावयव भूषण, प्रेमरत्न, नवीनोत्सव संग्रह, कुब्जा पचीसी, मनोर्थ मुक्तावली, मूर्ख शतक, गोदा मंगल, सनेह शतक, वैष्णव धर्म, श्री गोपीप्रेम पीयूष प्रवाह, हरिहराष्टक, पावस पचासा, प्रष्णोंत्तर, हरिदास वंशानुचरित, यमुना छप्पन मांग, छंद नवनीत, और रहिमन शतक आदि।

शृंगारवर्णन का बाहुल्य इन के काव्यों में मिलती है। इन की कृतियों को दो वर्गो में विभाजित किया जा सकता है।

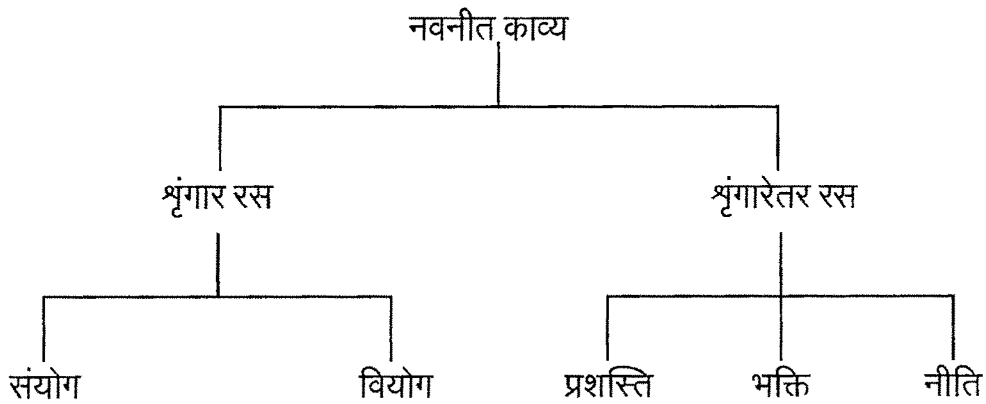

इन्होंने 'नवीनोत्सव संग्रह', मनोर्थ मुक्तावलि, 'गोदा मंगल', 'हरिहराष्टक', और 'यमुना छप्पन भोग' में नवनीत जी ने भक्ति की भावना को प्रस्तुत किया है। जिसमें होली के उत्सव में दिवाली उत्सव की परिकल्पना की है। 'नवनोत्सव संग्रह' में -

चारों ओर जगर-मगर मग होन लागी,
गौंन लागी होलिका समाज साज भरिकें।
कहैं नवनीत, नवनीत कौ उछाह पाय,
छाय इंदरानी करे आयुस में तरिकैं।
देखत ही देखत विचित्रता भई री आज,
फागुन को कौन लेगयौ समेट हरिकै।
नभ तैं गिरी है द्रुम डारन झरी है सखी,
आई है दिवारी कौन कुंज तै निकरिकै॥[2]

'मनोथ-मुक्तावली' में मन्दिर में सम्पन्न हुए उत्सवों, प्रशस्तियों और लीलाओं का चित्रण है। 'गोदा मंगल' में भगवान श्री रंग के विवाहोत्सव का विस्तृत वर्णन किया है। 'हरीहराष्टक' में शिव एवं कृष्ण की महिमा का वर्णन है। उदाहरण-

इतै मोर पच्छ उतै जटा सोहत है,
उतै चंदभाल इते चंद वंश लहिरे।
'नवनीत' प्यारे बैजंती माल सोहै उतै,
इते मुण्डमाल जो विसाल कंठ गहिरे।
इतै नाग नाथ्यौ उते भूषन भुजंग किये,
इतै जमुना है उतै रही गंग बहिरे।[3]

'श्री यमुना छप्पन भोग' में आचार्य ब्रजपाल लालजी महाराज द्वारा सम्पन्न यमुना छप्पन भोग का वर्णन किया है।

शृंगारिक रचना **'श्यामांगावयव भूषण'** में नायिका राधा का अनूठे ढ़ंग से रचा है उदाहरण

श्री जमनाजल न्हाइचल, घर कौ वह बाल प्रवाल प्रभा सी।
सोहत स्याम सरीर पै चीर, मनौं दरसैं छवि बिज्जु प्रकासी॥
बालन के संग में इठलात अनंग उमंग भरी बरसा सी।
घूँघट कौ पट खोल दियौ तब द्वैज की व्है गई पूरन मासी॥[4]

'सनेह शतक' में गोपियों के कृष्ण के प्रति प्रेम को सवैया, धनाक्षरी, दोहा और कुण्डलियों द्वारा रचा है। गोपी की प्रेम पीढ़ा का उदाहरण इस प्रकार है।

चुगारूप को नेह जल, अजहू दीजिये आन।
देह पींजराम परे, तलफत पंछी प्रान।
तलफल पंछी प्रान जान निकसे नहीं तन सौ।
ऐसे हूँ दुःख पाइ होत न्यारे न हिं मन सौं।
कहि 'नवनीत' पुनीत सह्यो सर मैंन भूप कौं।
अबहु दीजिये आन नेह जल चुगारूप को।[5]

'पावस पचासा' में विहरणी नायिका की वेदना तथा सयोंग वर्णन छंदों द्वारा किया है। जिसमें ऋतुओं के माध्यम से चमत्कार उत्पन्न किया है। उदाहरण -

किड किडा धान धित किट धित धान धान
तत्तड़ान-तत्तड़ान करत पुकारे हैं।
कहैं 'नवनीत' चोप चपल चमंकन की,
अ र् र् र् र् क्णां क्णां गरज हँकारे हैं।
धूँ धूँ किट धूँ धूँ किट धमकत धाम धाम,
धसकत प्रान बिरहीन के बिचारे हैं।
ग्रीष्म गनीम ताकौ दखल उठाय आजु,
बाजत ये मदन महीप के निगारे हैं।[6]

'प्रेम रत्न' धनाक्षरी, सवैया दोह और छप्पय द्वारा नायकि के प्रेम-विरह वेदना है। तो दूसरी और राधा कृष्ण के प्रेम का वर्णन भी किया है। उदाहरण-

नूतन किशोरी चित दूर ते चूराएं लेत,
भोरी मुरि भूषित सुराई सी भरत जात।
उन्नत उरोजन पै कंचुकी कसीली अति,
मोतिन के हार हिय हैरत हरतजात।
कहि नवनीत जा के विषद विसाल नैन,
बैं न पिक चालहंस बस ही करत जात।
मानौं काम जौहरी जवाहर छिपाय राखे,
तन पर अमल गुलाव सौ करत जात।[7]

'कुब्जा पच्चीसी' में सोरठा, दोहा, धनाक्षरी, और सवैया द्वारा कुब्जा का पक्ष

लेकर गोपियों को खरी खोटी सुनाई है।

'रहिमन शतक' और **'मुर्खशतक'** में नीति के विषयों की श्रेणी में माना जाता है। **'मुर्ख शतक'** में मूर्ख व्यक्ति के सौ लक्षण बताए है। **'रहिमन शतक'** में रहीम दासजी के 100 दोहों पर कुण्डलियों के रूप में टीकाए लिखी है।

रहीम–रहिमन मन की व्यथा कौं मन ही राखौ गोय,
सुन इठलैंहैं लोग सब बाँट न लैहैं कोय॥
नवनीत–जो जन जिय के दरद की बात प्रगट करिदेय,
सोहू मुरख जानि ये बाँटि न कोहू लेय॥[8]

मूर्खशतक

'खोटे हाकिम के निकट करै न्याय की आस,
बधिक बेरिया में कहाँ मधु मालती सुवास।
लाभ करन कौं जाय जो लोभी नर के पास,
कहाँ जेठ की धूप में बेधन बिज्जू प्रकास॥'[9]

'गोपीनाथ जी का जीवन चरित्र' में वल्लभ सम्प्रदाय की प्रशस्ति में 50 छंद लिखे शेष 100 छन्द भावशाली राजाओं व्यक्तियों के गुणों का बखान करते हु लिखा है। महाराणा प्रताप की प्रशस्ति में लिखा है।

कोप पुरहूत को पवित्र ब्रज मंडल ज्यौ।
त्यौही ये प्रताप गिरिकानन मझारौ है॥
वारि ते उपारि ब्रजवसिन की रच्छा करी।
इनहू कुल छत्रिन कौ छत्र लै उबारौ है॥
राम कृष्ण है कैं इन असुर संहारे बहु,
इनहू युगल दल दुरित पछारौ है।
जैसे बाज छुदित कबूतर पै दाव भरै।
अकबर से साह कों मरोर मीड़ डारौ है।[10]

श्रृंगारिक, भक्ति, और नीति के अलावा चेतना के स्वरों को भी रचा जिस में अग्रेजों के प्रति धृणा की भावना और बलिदानों की कहानी को रचा और स्वतंत्रा के सपने को साकार होने की भविष्यवाणी भी की।

(अंग्रेजों के प्रति धृणा भावना)

लूट देस देस के नरेसन कौ दंड लै कै।
टिकट लगाई घर घरना कमू ले गए॥
बीस-बीस खोलिकै कचैरिन के कारखाने।
पूरे पापी अफसर पुलिस हू के हवै गए॥
चुंगी औ चबूतरा में इज्ज़त बिगार दैय।
लेय घूँस पचड़ बिचारे धनै दै गए॥
ऐसो ये समैं आयो रहिबो हू कठिन भैया।
हाकिम अंग्रेज हू हराम जादे व्है गए॥[11]

आजादी की भविष्यवाणी कर अंग्रेजों को सावधान किया।

आए दीन हो इकैं अधीन कियौ भारत को,
तौहू दीन दसा में यहीं कौ अन्न खाइंगे।
'नवनीत' नैंक हू न आवत विचार जिनें,
प्रजा कलपाय कहौ कैसे कल पाइगें।
कुटिल कुचाली अति जाली सब भांतिन सौ साफ करो,
देख लीजौ वारि के बबूला ज्यौ बिलाइंगे।
चार ही दिना हैं अब राज काज करिबे के,
बीसौ बिसे बौरिन कौं लाले पर जाइंगे॥[12]

इस प्रकार कविरत्न नवनीतजी ने छन्द सोरठा, दोहा, सवैया, छप्पया और कुण्डलियों द्वारा संजकता, सुन्दरता द्वारा रचा है। इस में श्रृंगारिकता की प्रधानता तो रही है साथ ही अन्य विषयों का भी समावेश किया गया है। स्वछंन्द विचारधारा, चित्रात्मक शैली द्वारा ब्रजभाषा काव्य में उच्च कोटि की रचनाएं रचकर अपना योगदान दिया है।

2. कविरत्न गोविंद जी

'कविरत्न गोविंद जी' को काव्य की प्रतिभा विरासत में प्राप्त हुई थी। बचपन से ही वे काव्य जगत से जुड़े रहे, जिस के फलस्वरूप युवास्था में एक निपुण साहित्यकार के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की। इन का पूर्ण परिचय उन के द्वारा रचित कवित्त

के माध्यम से ज्ञात होता है।

धाम मथुरा है, जो धुरा है ध्रुव धर्म की ही,

मारुगली माँहि मंजु महलसुखारौ है।

सुकवि पुनीत नवनीत कौ सपूत अरू

कम्य–कविताई पै बपौती कौ इजारौ है।

सरसुति मैया कृपा छत्रनि छबैया सदा,

प्रेम कौ पुजारी नाम 'गोविंद' गुहारौ है।

बसत अनन्द ते कलिंद तनया के तीर

परचौ प्रवीनन कौ परचौ हमारौ है॥[13]

इन्होंने परम्परागत रचनाओं के साथ-साथ आधुनिक विषयों पर भी उचकोटि के काव्यों की रचना की। 'गोविन्द सागर' कमल सतसई, तथा 'ध्वनि विमर्श' ग्रंथ मुख्य है। 'भारत भारती' महाकाव्य है 'आरत-भारत' खण्ड काव्य है। इस के अलावा 'ब्रजबानी' विभिन्न विषयों का उपवन हो इन के परम्परागत और आधुनिक विषयों के कुछ उदाहरण देखेगें जो इन के काव्य कौशल्य को प्रस्तुत करते हैं।

भक्ति : काव्य के प्रारंभ में गणेश वन्दना ब्रजकवियों की विशेषता रही है गोविंद जी ने 'गोविन्द सागर' में परम्परा को निर्वाह करते हुए प्रारंभ में गणेश वंदना की है।

सुण्डा दण्ड कुण्डलित कुण्डित कलितकान,

बालससि भाल भुज चार बरदानी में।

मति के सदन गजबदन रदन–एक

अलक अलीन अलि उपमा बखानी में।

अरून अमंद गौरीनन्दन 'गुविद' कवि,

काटे दुख द्वंद फंद वंदन प्रमानी में।

बानी में समानी गुन गरिमा प्रदानी करौ

करत प्रनाम तुम्हें जोर जुग में पानी में॥[14]

कृष्ण लीलाओं का ब्रजकाव्य में अत्यांधिक महत्व है। इस विषय पर भी बहुत ही सुन्दर रूप में गोपाल लाल शीर्षक द्वारा तान की रचना की जिसमें कृष्ण ब्रज के रखवाले हैं -

प्यारे। गोविंद ब्रज के रखवारे॥

तोही पै गाय दुहानी है नटनागर नंद दुलारे॥

आना कान्हा साँज सकारे, बाट निहारौ ठाड़ी द्वारे॥

लेहु दुहाई हितचित चाही, चतुर चटावन हारे॥

प्यारे...॥[15]

इसके के अलावा होली, चीर लीला, पनघट, गिरि-धारनलीला, महारास लीला, उद्धव लीला उद्धव लीला वचन, जैसे विषयों पर लिखा है।

बंसत ऋतु आगमन का वर्णन करते हुए बहुत ही सुन्दर आम, कचनार और सरसों का वर्णन है।

मुकुलित आमन के मौरन के झौरन पै, दौरि दौरि भौरि भौरनि ने, बाँसुरी बजाई है।
'गोविंद' अनार कचनार न की डारन पै, कोयल सुरीली तान सरस सुहाई है।
खेतन में सरसों सुबास सुखदाई मंजु, माधवी खिलाई पौन पावन बहाई है।
सिसिर कौ अन्नत करि आँनद, अनंत करि, कान्त करि कलित बंसत रितु आई है॥[16]

श्रृंगारिक रचना में नायिका भेद, नखशिख वर्णन, षटऋृतु वर्णन, सयोंग वर्णन, नायिका के हाव-भाव, अंग सौदर्य और वस्त्राभूषणों आदि का सुन्दर वर्णन किया हैं। प्रस्तुत कवित्त में नायिका के शारीरिक सौन्दर्य के साथ भाव सौंदर्य को भी अभिव्यक्त किया है।

अरी ग्वालिनी गोरस को रस दै, बस कीनौ हियौ खिसगे गजरा।
भलौ घूँघट सूक्ष्म अम्बर में मनौ नैनन मैन करै मुजरा।
चली जात नई मथनी मे घरै, मन माखन गोविन्द कौ नजरा।
कजरा आखियाँ में हँसै सजनी तेरी आँखिन बीच हँसे कजरा॥[17]

विरहा अवस्था में नायिका के विरह मनःस्थिती का सजीव सुंदर वर्णन किया है।

बेधत विरह सरि छेदत कुसुम सर,
सरस सुगन्धित समीर सरसान की।
मानहु 'गोविंद' द्वै अचल चपला-सी रही,
बेसुध विचारन मरोर निज मान की।
सेवती गुलाल गुल सब्बौ के विछोनन पै,

हेमकी छरीं सी परी विकल विधान की।

बारी बनवारी के विलोक बिन बौरी बनी,

होरी होनी चाहत किसोरी वृषभान की॥[18]

इन भक्ति, श्रृंगार के अलावा इन्होंने आधुनिक भारत, भारत की समस्याओ को भी काव्य में अभिव्यक्त किया। जिस में ऊँच-नीच, पूँजीवाद मँहगाई, गरीबी, और भारत में सफल प्रजातंत्र, और समानता के स्वरों को काव्य के माध्यम से प्रस्तुत किया। जिनके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं -

ऊँचौ नीचौ छोटौ बड़ौ हीनता विचार त्यागि,
सम विवहार धार समरस लाइयै।
सुकवि 'गोविंद' जग घट के रचैया दैया,
पदवी प्रजापति की दुहुन दिवाइयै।
एक बैठे कार, एक लेटै कीच-करून में,
छूकर दुहूँ पै करनी कौ फल पाइयै।
देस ते कलेस नाबि के, काज आज सब,
भारत में प्रजातंत्र सफल बनाइयै॥[19]

महँगाई :-

मार मँहगाई, जो भगाई दुखदाई दूरि, अति सुखदाई, सो गरीबनु सुहाई है।
अन्न उतपादन बढ़ावन की छाई छटा, बस्तु उपभोक्त बसूली वितराई है।
भूमिहीन कृष कृषकन में बटाई भूमि, बंधक विचारेनु, विभूति दरसाई है।
सासन में लाइ अनुसासन, घटायौ खर्च, सुरज समाजवाद जेति चमकाई है।[20]

इस प्रकार **'कविवर गोविन्द जी'** ने ब्रजभाषा में उच्चकोटि के काव्यो की रचना की उन्हें मल्ल विद्या ज्योति विद्या, पौराणिक ज्ञान, वैधक ज्ञान, जौहरी विद्या, पाक शास्त्र का ज्ञान भी अच्छा था। और संगीत के भी जानकार और ज्ञाता ऋषीकेश, नाथूराम शंकर, हीरा लाल चतुर्वेदी एवं डॉ. विष्णु विराट जैसे सकवियों का साथ रहा।

व्यंग्यपरक, आक्रोश परक, आलोचनापरक रचनाओं ने युगीनचेतना को जगाने में साथ दिया। समाजवादी मत, वैज्ञानिक उपलब्धियों का महत्व, समानता, राष्ट्रप्रेम साम्यवाद, अध्यात्म का स्पष्टीकरण, दमिंत एवं शोषितों के प्रति श्रद्धा धार्मिक

सहिष्णुता, राजनीति, सामयिक समस्या जैसे युगीन विषयों पर विभिन्न कवित्त की रचना कर आधुनिक युग में भी ब्रजभाषा के स्थान को यथावत् रखने में कार्यरत रहे। किन्तु मथुरा 4 जून 1987 को ब्रजभाषा का अनमोल रत्न अपनी चमक साहित्य दुनियाँ में छोड़कर चले गए। माया प्रकाश पाण्डे के शब्दों में **'कवि मूल रूप से रसवादी भावनालोक का गमन यात्री रहा है, जो बारबार जमीन पर उतर कर चरन धरत चिन्ता करत की स्थिति का शिकार होता है और पुनःपंख पसार गगन की गहन नीली ऊँचाइयों में अन्तव्याप्त हो जाता है।'**

वह तो चले गए किन्तु अपना प्रभाव ब्रजभाषा के काव्य क्षेत्र में आजतक बरकरार रखा है।

3. डॉ. जगदीश गुप्त

समकालीन कवियों में सोमठाकुर, श्रीधर पाठक, ऋषिकेश चतुर्वेदी और विष्णु विराट जैसे प्रतिभाशाली कवियों के साथ जगदीश गुप्त का नाम भी विख्यात है। इन कवियों ने खड़ीबोली के साथ ब्रजभाषा की लोकप्रियता के विस्तार में महत्वपूर्ण योगदान दिया और भाषाओं में अन्तर नहीं किया और परंपरागत और आधुनिकता दोनों को अपनाया।

जगदीश गुप्त के अनुसार **'भावात्मक और वैचारिक दोनों स्तरों पर मैं कह सकता हूँ कि सयम और अर्जन के क्रम में कहीं न कहीं मेरी आत्मदान की प्रवृत्ति भी शामिल रही है। मेरे एक हाथ में परम्परा रही तो दूसरी में प्रर्वतन।'**

'छन्दशती' काव्य की पूर्ण सौदर्यता देखी जा सकती है। जिसमें भाषा-भावों का सुन्दरता और विभिन्न परिकल्पनाओं का सवैया और छन्दों द्वारा वर्णन किया है विहरणी नायिका, कृष्ण सौदर्य, होली वर्णन, और ऋतु वर्णन का अनूठा प्रदर्शन किया है। होली का रंग शरीर के साथ मन को भी रंग गई गौरी मन को कृष्ण की पिचकारी ने रंग दिया इसे बहुत सुन्दर रूप से प्रस्तुत किया।

मारि गयौ पिचकारी अचानक, थोरी सरीर पै थोरी हिये में।
भींजि गई सगरी अँगिया, रसधार बही बरजोरी हिये में।
चोरति प्रीति, निचोरति चीर, संकोचति-सोचति गोरी हिये में।
भाल अबीर, गुलाल कपोलन, नैनन में रँग, होरी हिये में।।[21]

सौंदर्य का वर्णन करते हुए गुप्त जी ने, इसमें नयनों, गाल, मुख का सुन्दर वर्णन किया है।

गालन पै हिलैं लाल गुलाब, खिलै मुख देखि सरोज हजारन।
बाल की बंक बिलोकनि में, बिकसे छन ही छन ओज हजारन।
आँगन में पुतरीन के आई, थकैं, थिरकैं रति रोज हजारन।
बान कमान लियैं कर में, आँखियाँन सौ झाकै मनोज हजारन॥[22]

मुसकान और प्रकृति के सौंदर्य उदाहरण द्रष्टाव्य है।

आजु लौं भूली नही मन में, कसकै मुसकानि बसी उहि रोज की।
फूल की बास सौं मारत भौंरन, है कछु ऐसियै रीति मनोज की।
प्रान में प्रानन की पहिचानि, कसी विकसी उपमा यहि ओज की।
पौन की धार में, मानौ मृनाल के तार सौं बाँधी सुगंध सरोज की॥[23]

विहरणी नायिका का उसके आँसूओं भाव-विभोग वर्णन करते हुए पीड़ा का सजीव चित्रण किया है।

कीन्हें हजारन हू, बरूनीन के, जारन में न कबौ लहि जायँगी।
पाइ जो नीर गंभीर गई कहूँ, फेरि न ये मछुरी गहि जायँगी।
देखत देखत बूढ़िहैं तारक, सूनी दुऔ पलकैं रहि जायँगी।
रोउ नहीं, अरी रोउ नहीं, न तौ आँसुन में आँखियाँ बहि जायँगी।[24]

श्रृंगारिक वर्णन को अपनी भावविक्ती द्वारा सुंदरता और सहजता से प्रस्तुत किया।

नँद नंदन औचक आवै जवै, जिय द्वन्द्व न देह सँवारन दै।
तजि धीरज बोलि उठैं बरुनी, पन नीरज की रज झारन दै।
पुतरी कहै मारग तैं हटि जा, अँसुआ कहैं हारन डारन दै।
पलकैं कहैं मूदि लै मूरति कौं, अँखियां कहै और निहारन दै।[25]

इस प्रकार 'डॉ. जगदीश गुप्त' ने आधुनिक युग के कवियों में अपना एक अनूठा स्थान बना रखा है। और पंरपरित ब्रजभाषा के सौंदर्य को बरकरार रखा है। 'छन्दशती' के अलावा स्फूट रचनाएँ रची। और काव्यक्षेत्र में ब्रजभाषा के प्रवाह को गतिमान रखा है।

4. सोम ठाकुर :-

आधुनिक ब्रजभाषा काव्य जगत में मंचीय कवि के रूप में प्रचलित 'सोम ठाकुर' एक प्रतिष्ठत कवि रहे हैं। इन के काव्य में सरसता,सरलता और भावात्मक मधुरता अदि से अन्त तक व्याप्त है। धर्मयुग, हिन्दुस्तान, ज्ञानोदय, वीणा, आदर्श, कादम्बिनी आदि पत्रिकाओं में इनकी रचनाए प्रकाशित होती रही हैं। 'एक ऋचा पाटलकी' 'अभियान' (खण्डकाव्य) और 'ब्रज छन्दिमा' इनकी रचनांए है और अनेक नवगीत संग्रहों में कार्यरत हैं। ठाकुरजी लेखन के साथ काव्यपाठ, गीतकार और समीक्षक के रूप में भी विख्यात हैं।

कृष्ण की जन्मभूमि ब्रज वह पावन भूमि है जिस का गुणगान करना हर कवि अपना कर्तव्य समझता हैं ब्रज की हर उन जगहों जहां कृष्ण विभिन्न लीलाएँ करते थे और वह वस्तुएँ जिसे अपने स्पर्श से मूल्यवान बना देते थें। उसी ब्रज की महिमा का गान करते हुए सोमठाकुर जी ने ब्रज में जन्म के लिए पुन्यों को महत्व दिया।

ब्रजधाम महा अभिराम जहाँ, घनस्याम-से आनंद रासी भए।
ब्रज व्योम के सोम गुविन्द कलानिधि, राधिका प्रेम प्रकासी भए।
हम कौन-से दान दये जो अबै, नँद नन्दन के अभिलाषी भए।
किन पूरन पुन्य प्रतापन सौं, व्रज में जन में ब्रजवासी भए।।[26]

श्री यमुनाजी

भुवि भानुजा भूरि सुहावन सौ, भव-भूतल भावन कौं भारि है।
सरसात सबै जो सनेह सने सुख सौ पिय सौं सबकी सरि हैं।
सरि हैं न जो तारन तीरथ पै, तरि सूर तनूजा में तरि है।
जम ना करि है जग जीवन जो जमुना करि है।[27]

इसी प्रकार विलोमोक्ति की रचना करते हुए सोमठाकुर जी ने अपनी अनोखी प्रतिभा परिचय दिया। उदाहरण द्रष्टाव्य है।

नित काटत बंधन मोहन के, सोई मोहन मोह मढ़यौ हम देख्यौ।
बर बैनन नैनन सैनन में, दिन रैन सनेह बढ़यौ हम देख्यौ।
चितचोर के चित्त पै राधिका कौ, चलचित्र विचित्र कढ़यौ हम देख्यौ।
कहे स्याम पै दूजौ न रंग चढ़ै, ता पै गोरी को रंग चढ़यो हम देख्यौ।। [28]

सामान्यतः काले रंग पर कोई रंग नही चढ़ता किन्तु प्रस्तुत पद में सोमठाकुर जी ने कृष्ण के साँवल रंग पर राधा का रंग चढ़ गया इस तरह के भावों को दर्शाया है।

इस प्रकार आगरा में 1934 में जन्मे सोमठाकुर जी आज आधुनिक हिन्दी मंचीय कविता के प्रतिष्ठित कवि माने जाते है।

5. श्रीनाथूराम शर्मा 'शंकर'

महाकवि नाथूराम शर्मा 'शंकर' का जन्म अलीगढ़ जिले के हरदुआगंज नाम स्थान में संवत् 1916 को हुआ। बचपन से काव्य में रूचि रखते थे। पं. प्रतापनारायण मिश्र के ब्राह्मण पत्र में इनकी रचनाएँ छपती थीं। साथ ही पं. अम्बिका दत्त व्यास, रायदेवी प्रसाद पूर्ण, श्री बद्रीनारायण 'प्रेमघन' जैसे माहिर कवियों के सम्पर्क में रहने से इन्हें काफी प्रेरणा मिली।

इन का ब्रज और खड़ी बोली पर समान अधिकार था। इन की मुख्य रचनाएँ हैं। शंकर सरोज (भजन, गीत, कक्ति सवैया आदी), अनुराग रत्न, गर्भ रंग रहस्य, शंकर सतसई, और हरिशचन्द्र नाटक आदि। 'सरस्वती' में हमारा अधःपतन, सम्मुखोद्गार, वसन्त सेना, केरलकी नार, पंच कुमार शीर्षक कविताएं प्रकाशित हुई। इन्होंने विविध विषयों पर छन्द, पद तथा विविध साहित्यक विधाओं में रचनाएँ रची। विषय की दृष्टि से ज्यादतर रचनाएँ समस्यापूर्ति की हैं। इस के अलावा दर्शन-आध्यात्म, समाज और राष्ट्र पर लिखा। जिस के फलस्वरूप कविराज, भारत प्रातेन्द्र, साहित्य सुधारक, साहित्य सरस्वती कवि सम्राट तथा महाकवि आदि उपाधियों से अलंकृत किया गया था।

इस संदर्भ में कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं -

आँख से न आँख, लड़ जाय इसी कारण से,
भिन्नता की भीत, करतार ने लगाई है।
नाक में निवासकरने को कुटी शंकर की
छबी ने छपाकर की छाती पै छवाई है।।
आनन की ओर चले आवत चकोर मोर,
दौरि दौरि, बार-बार बेनी भटकट हैं।
झूमि-झूमि चखन को चूमन को चंचरीक,

लट की लटन में लपट लटकत हैं।
शंकर उरोजन पै राजहंस बैठि-बैठि,
हारन के तार तोरि-तोरि पटकत हैं।
आजु इन बैरिन सौं बन में बचावे कोन,
अबला अकेली मैं अनेक अटकत हैं।।[29]

(रूप-गर्विता)

एक बार पदमसिंह को एक छन्द लिखकर भेजा। जिसमें अज्ञात यौवना नायिका की मनस्थितिका चित्रण है-

देख देख दादी रात काट खाई माछरन,
वैसे कढ़ि आये मेरी छाती पैं ददोरदो।
पारसाल ऐसे ही दिखावत ही छोरी एक,
छेड़त है ताहि घरे-घरें मिटे छोरा दो।।
आगे बढ़ने पे कहूँ बांदने पर न हाथ,
उलटे मजीरन की भांति फूलें फोरादो।
आंकन को शंकर अकैया को बुलाय वेग,
लाद न सकूगी भारी तेरै से भटोरा दो।[30]

इस प्रकार महाकवि 'नाथुराम शंकर' उच्चकोटि के कवि थे। इन की ब्रजभाषा कविता में जो छन्दों की विविधता प्राप्त होती है। वह अन्यत्र अन्य कवियों में नहीं।

6. श्रीधर पाठक

ब्रज के 'जौधरी' नामक गाँव में संवत् 1916 में 'श्रीधर पाठक'जी का जन्म हुआ। प्रकृति के अत्यंत निकट रहनें वाले प्रकृति के सुन्दर कवि थें। पुरानी परम्परा में पले थे, किन्तु नवीन दृष्टिकोण रखने वालें थे। ब्रजभाषा के साथ-साथ खड़ी बोली में भी रचनाएँ लिखते थें। इन के द्वारा अनुवाद बहुत पसंद किया जाता था। गांव की प्रकृति में पले बढ़े उसी खेत-खलिहान, जौ-गेहूँ, लहराती फसलों, ताल तथा पोखरो का सुन्दर संजीव वर्णन मिलता है। साथ नवीन विचारधारा के फलस्वरूप राष्ट्र और समाज के प्रति जागरूकता भरें स्वर कविता के माध्यम से प्रस्तुत किये।

इन की मुख्य रचनाएँ है। काश्मीर-सुषमा, हिमालय-वर्णन भारतोत्थान,

बाल-विधवा, भारत-प्रंशसा आदि। 'गोल्डस्मिथ' के डेर्जअन्डलेज रचना का ब्रजभाषा में 'उजड़ गांव' नाम से अनुवाद किया।

'ऋतु संहार' में वर्षा का सुंदर वर्णन करते हुए लिखा हैं।

वारि फुहार भरे बदरा सोई सोहत है कुंवर से मतवारे।
बीजुरी जोति धुजा फहरे, घन गर्जन शब्द सोई हैं नगारे।
रोर के घोर कौ और न छोर नरेसन की सी छटा छविधारै।
कामिनि के मन को प्रिय प्रवास आयौ प्रिय नव मोहिनी डारे।।[31]

काश्मीर सुषमा में शब्दों की सुन्दरता से प्रकृति सौदर्य-वर्णन सजीव सुन्दर हो गया है। जैसे

सजति, सजावति, सरसति, हरसाति, दरसति प्यारी।
बहुरि सराहति भाग पाय सुठि चित्तरसारी।
बिहरति विबिध-बिलास भरी जोबन के मद-सनि।
ललकति किलकति, पुलकति, निरखति, थिरकित बनि-बनि।।[32]

इस प्रकार 'श्रीधर पाठक' आधुनिक युग में ब्रजभाषा का अस्तित्व बनाये रखने वाले कवियों में से एक हैं। इन्होंने कवित्त-सवैयों के अतिरिक्त बरवै छन्दों का भी प्रयोग किया है। **आचार्य पं. रामचन्द्र शुक्ल** के शब्दों में तो **''इनकी जैसी मधुर और रसभरी ब्रजभाषा पुराने कवियों में भी किसी-किसी की हो मिलती है।''**

कहीं-कहीं पर इनकी ब्रजभाषा बहुत अंशों में खड़ीबोली से प्रभावित लगती हैं जैसे-

हे घन, किन देसन मह छाये, वर्षा बीति गई।
फिरहु कहां भरमाये, क्या यह रीति नई।।
सावन परम सुहावन, पावन सोभा जोय।
सो बिनु तुम्हारे आवन, रह्यो भयावन होय।।
गयौ सलूनो सूनो, तुम बिन निपट उदास।
दुःख बाढ़ै दिन दूनो, चहुं दिसि परि रह्यो त्रास।।
सरवर सरित सुखानी, रजमय मलिन अकास।।
ऊबि अवनि अकुलानी, खग, मृग मरि रहे प्यास।।[33]

इस प्रकार **'श्रीधर पाठक'** प्रकृति चित्रण में निपुण थे। साथ ही भारतीय जनमानस की आस्थाओं का वर्णन है। और ब्रजभारती के सर्वस्व थे।

7. कवि ग्वाल

कवि ग्वालजी का जन्म मथुरा में संवत् 1848 में हुआ। इन के गुरु दयाल जी थे। और बचपन से ही इन्हे काव्य की ओर रूझान था। इन के बारें में इन के ही द्वारा रचित इस छन्द से जान सकते हैं।

वासी विन्दा विपिन के श्री मथुरा सुखबास।
श्री जगदम्बा दई हमें, कविता विमल विकास॥
विदित विप्र वन्दी विसद, वरने व्यास पुरान,
ता कछु सेवाराम को, सुत कवि ग्वाल सुजान॥[34]

ग्वाल जी उस समय के रचनाकार है। जब रीतिकाल का अन्तिम समय और आधुनिक काल का शुकवाती समय था इस लिए ग्वाजी को ब्रजभाषा के आधुनिक कवियों में विशेष स्थान प्राप्त हैं। यह बहुयामी व्यक्तित्व के धनी हैं। इन्हें सिर्फ ब्रज ही नहीं साथ ही उर्दू तथा पंजाबी में भी सुन्दर काव्यों की रचना की हैं। इन की मुख्य रचनाएँ हैं।

'निम्र्बाक, नेह निवाद्ध, यमुना लहरी, रसिकानन्द, हम्मीर हठ, कवि दर्पण, श्री कृष्ण जू को नखशिख, विजय विनोद, बलवीर विनोद, रसरंग, साहित्यानन्द, इश्क लहर दरियाव, गुरूपंचासा, दृग-शतक, प्रस्तार-प्रकाश, गोपी पच्चीसी, कुब्जाष्टक, षडकतु वर्णन, प्रस्ताव कवित्त, राधाष्टक, कृष्णाष्टक, रामाष्टक, गंगपंचदशी, महाविद्या पंचदशी, ज्वाला बीसा, वंशीबीसा, प्रथम गणेशशाष्टक, द्वितीय गणेशाष्टक, शिवादि स्तुति, भक्त शन्ति, के कवित्त, इतर भाषाओं की रचनायें।'

इन की कविता का एक उदाहरण इस प्रकार है।

रीझानि तिहारी न्यारी अजब निहारी नाथ,
हारी माति व्यास हूँ की पावत न ठौर है
नाम लियो सुत कौ, सो हित कौ विचारयों निज,
गनिका पढ़ायौ सुक ताते करी दौर है॥
ग्वाल कवि गौतम की नारी है सिला सरूप,

कीबौं कब तारिबौ कौ कही कौन तौर है।
पति की पतारी हुती पतिक कतारी ताहि,
तारी तुम राम! तारी तुम सौ न और है।।[35]

8. वियोगी हरि

वियोगी हरि जी, का जन्म छतरपुर गाँव में बुंदेलखण्ड के राज्य में संवत 1954 में हुआ बचपन से ही काव्य में रूचि रखते थे। संपादन के कार्य में भी चार साल तक 'सम्मेलन पत्रिका' में अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। ये हरिजन सेवक संघ, गाँधी स्मारक निधि तथा भूदान आन्दोलनों में सक्रिय भूमिका निभाते रहे हैं। इन्होंने अभी तक लगभग 40 पुस्तके रची थी, 18 वर्ष की उम्र में ही **'प्रेमशतक, प्रेमपथिक, प्रेमांजलि तथा प्रेमपरिषद'** नामक ग्रन्थों की रचना कर अपने काव्य कौशल्य और रूचि का परिचय दिया इस के अलावा इन की रचनाएँ है। छद्मयोगिनी, साहित्य विहार, कवि कीर्तन, अनुराग वाटिका, वीर हरदौल, मेवाड़ केशरी चरखा स्त्रोत, गांधी जी का आदर्श,, चरखे की गूंज, वीरवाणी, गुरू पुष्पांजलि, वीर सतसई प्रार्थना, भावना, अंतर्नाद, और मेवाड़ केसरी आदि।

नाटक गद्यगीत निबंध तथा बालोपयोगी पुस्तकें भी लिखी। इनकी रचनाओं के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं। 'महाराणा प्रताप'में महाराणा प्रताप के शौर्य का वर्णन है।

अणु-अणु पै मेवाड़ के, छपी तिहारी छाप।
तेरे प्रखर प्रताप तें, राणा प्रबल प्रताप।।[36]

** * **

उँमड़ि समुद्र लौं, ठिलै आप तें आप।
करूण-वीर-रस लौ मिले, सत्ता और प्रताप।।[37]

देशद्रोह कविता के माध्यम से अग्रेंज के साथ रहे उन दिनों के दर्द को प्रस्तुत किया है।

भूलेहू कबहूँ न जाइए, देस विमुखजन पास।
देश-विरोधी-संग तें भलो नरक कौ बास।।
सुख सों करि लीजै सहन, कोटिन कठिन कलेस।
विधना वै न मिलाइयो, जे नासत निज देस।।

सिव-बिरंचि-हरिलोक हूँ, बिपत सुनावै रोय।
पै स्वदेस-बिद्रोहि को, सरन न दैहैं कोय।।[38]

व्यर्थ गर्व में गर्व छोड़ने को कहा है। गर्व छोड़ने को कहा है।

अहे गरब कत करत तूँ खरब पाय अधिकार।
रहे न जग दसकंध से दिग्विजयी जुगचारा।[39]

इसी प्रकार सुन्दर कवित्त इस प्रकार हैं।

ब्रजवानी पदमाधुरी मधुसानी रस लीन।
विधि रानी गावति अजौ जासु गुननि लै बीन।।
जापै तृन लौ वारिये राग-विराग सुहाग।
बड़े भाग ते पाइये सो अगाध अनुराग।।
लखि तिनके मजबूत भुज कॉपत है जमदूत।
भारत भू ते उठि गये, वे बांके रजपूत।।
पावस ही मैं धनुष अब सरित तीर ही तीर।
सेदन ही मैं लाल दृग, नव रस ही मैं वीर।।[40]

इस प्रकार वियोगी हरि जी, बहुयामी प्रतिभा के धनी, एक कवि और लेखक दोनों ही बहुत अच्छे माने जाते हैं। वीर-सतसई पर इन्हें 'मंगलाप्रसाद पारितोषक' भी मिला था। इस प्रकार थे वियोगी जी आधुनिक ब्रजभाषा कवियों में सफल कवि माने जाते हैं।

9. भारतेंदु हरिश्चंद्र

आधुनिक हिंदी साहित्य के मुख्य कवि भारतेंदु हरिशचंद जी का जन्म काशी में हुआ। रीतिकाल और आधुनिक काल की संधि रेखा पर कवि के रूप में उभरने के नाते इन की कविताओं में प्राचीन और नवीन दोनों रूप देखने को मिलतें हैं साथ ही ब्रज भाषा के साथ खड़ी बोली में भी रचनाए मिलती हैं। बहुमुखी प्रतिभा के धनी 'भारतेन्दु'जी के काव्य में विषय की वैविध्वता भी मिलती है। भक्ति, शृंगार, हास्य प्रकृति-चित्रण और समसमायिक विषयों पर सुन्दर रचनाएँ रची है। इन्होंने 175 ग्रंथ की रचनाएँ की है जिन में से 69 उपलब्ध हैं। इन के प्रसिद्ध नाटक है। सत्य हरिश्चंद्र, भारत-दुर्दशा, वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति, आदि। ब्रज और खड़ीबोली दोनों भाषाओं

में रचनाएं रची हैं। जिनमें मुख्य हैं। भक्ति सर्वस्व, प्रबोधिनी, प्रेमसरोवर, , सतसई-श्रृंगार आदि।

इनके काव्य के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं।

परत चन्द्र प्रति बिंब कहूं जलमधि चमकायो।
लोल लहर लहि नचत कबहुं सोई मन भायो।
कबहुं होत सत चंद, कबहु प्रगटत, दुरि भाजत।
पवन गवन बस बिंब रूप जल में बहु साजता।[41]

प्रकृति सौंदर्य के साथ श्रृंगारिक वर्णन भी बहुत सुन्दर किया है।

सोई लिया अरसाय कै सेज पै, सो छबि लाल विचारत ही रहे।
पोंछि रूमालन सों क्रम-सीकर, भौरंन कौं निरूवात ही रहै॥
त्यों छबि देखिबे कौ मुखतै, अलकैं हरिचंद जू टारत ही रहै।
द्वैक धरी लौं जके से खरे वृषभानु कुमारि निहारत ही रहे॥[42]

* * *

पूरी अमी की कटोरिया सी चिरजीओ सदा विक्टोरिया रानी।
सूरज चंद प्रकाश करैं जबलौ रहैं सातहू सिंधु मै पानी,
राज करौ सुख सों तब लौ जिनि पुत्र औ पौत्र समे तसानी
पालौ प्रजाजन कों सुख सों जन कीरति-गान करै गुन जानी॥[43]

गंगा-वर्णन और यमुना-वर्णन पर दोहे के कुछ उदाहरण -

नव उज्ञवल जलाधार हार हीरक सी सोहति।
बिच-बिच छहरति बूंद मध्य मुक्ता मनि पोहति॥[44]

* * * * *

तरनि तनूजा तट तमाल परुवर बहु छाये
झुके कूल सों जल-परसन हित मनहु सुहाये॥[45]

इस प्रकार भारतेन्दु जी, की भाषा में माधुर्यता और सरसता है। और गेयपद सवैया कवित, छप्पय, कुण्डलियाँ आदि सभी मिलते है भाषाशैली में सभी का प्रयोग है। अलंकार का प्रयोग कम किया मगर फिर भी शब्दों का सुन्दर सयोजन कर मानव हृदय को छू जाए ऐसी रचनाएँ रच कर खड़ीबोली के कवि होने के साथ ब्रजभाषा मंडल

के कवियों में भी मुख्य स्थान प्राप्त किया हैं। इन की प्रतिभा को पहचानते हुए काशी के विद्वान मंडल ने इन्हें भारतेन्दु की उपाधि से विभूषित किया।

10. अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

ब्रजभाषा से काव्य जगत में कदम रखने वाले 'अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'जी का जन्म 1922 में निजामाबाद में हुआ। किन्तु आधुनिक युग के कवि होने के नाते खड़ीबोली में भी उच्चकोटि की रचनाए रची। किन्तु ब्रजभाषा के माधुर्य को मे छोड़ ना सके अतः ब्रज और खड़ी दोनों भाषाओं में रचनाएँ रूपी और अपना एक अलग स्थान बनाया।

इन की ज्यादातर रचनाएँ समस्यापूर्ति और समसमायिक विषयों पर रची हैं। जिस में समाज सुधारक, देशप्रेम जैसे स्वर तो दूसरी और रूढ़ियों के प्रति घृणा को चित्रत किया है।

उनकी रचनाओं के कुछ उदाहरण देखगे।

ढूंढ़ि कै कुज में त्यों कलकूल पै, नाहि लूह्यो जब प्रानपती को।
रोदन ऐसो कियो वृषभानुजा, दुख भो जाते सबै जगती को॥
जा समै सीस उठाइ लख्यो 'हरिऔध' कहै दुख मोइ ससी को।
सोक पगे रजनीपति के अंसुआन सो भीज्यो लिलार को टीको॥[46]

* * *

बसि धर बार में बिसारे घरवारिनि कौ,
घरीघरी बीच घेर-घारन के घेरे ते।
तम मे उजारौ कियो, उर कौ उजेरौ लहि,
देखि जगजीवन के जीवन को नेरे ते।
कानन के कानन की बातन कौ कान करि,
आंखिन की आंखिनि कौ आंख माहि हेरे ते।[47]

इस प्रकार अयौध्यासिंह उपाध्याय जी की भाषा प्रसाद, माधुर्य और ओज कगुण से युक्त हैं। इन्हें कवि और आचार्य दोनों ही रूपों में स्वीकार किया है। कवि के रूप में प्रकृति और अन्य विषयों की भावाभिव्यजंना की है तो दूसरी ओर आचार्य के रूप में मौलिक उद्‌भावनाएं प्रस्तुत की हैं। 'रसकलस'इन का ब्रज भाषा का

सुन्दरकाव्य है। रस, छन्दों अलंकारों का भी सुन्दर प्रयोग किया है। इस तरह आधुनिक युग में भी ब्रज के माधुर्य को कामय रखने में अपना योगदान दिया।

11. जगन्नाथदास 'रत्नाकर'

आधुनिक ब्रजभाषा कवियों में 'जगन्नाथदास रत्नाकर' जी का नाम बड़े आदर से लिया जाता हैं इन्होंने खड़ी बोली आन्दोलन के चलते परवाह ना करते हुए ब्रजभाषा में ही रचनाएँ रचना जारी रखा। इन का जन्म काशी में सवृत 1923 में हुआ।

इन की रचना करने का तरीका और कवियों से भिन्न था। इसलिए इनकी रचनाओं में अलग ही माधुर्य व्याप्त है। जैसे इन्होंने प्रकृति को आलम्बन के रूप में प्रस्तुत किया। प्रबंध काव्य-रचना रची।

इन की मुख्य कृतियाँ हैं। 'उद्धव-शतक, 'श्रृंगार लहरी', 'गंगावतरण', वीराष्टक' तथा रत्नाकर आदि।

इन की कविताओं के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं।

विरह-बिथा की कथा अकथ महा,
कछत बनै न जो प्रबीन सुकबीनि सौं।
कहै 'रत्नाकर' बुझावन लगे ज्यौं कान्ह,
ऊधौ कौं कहन-हेत ब्रज-जुवतीनि सौं।
गहबरि आयौ गरौ भभरि अचानक त्यौं,
प्रेम परयौ चंपल चुचाय पुतरीनि सौं।
नेकु कही बैननि, अनेक कही नैननि सौं,
रही सही सोऊ कहि दीनी हिचकीनि सौं।[48]

(उद्धव शतक)

(भीष्माष्टक)

मुंड लागे कटन, पटन काल कुंड लागे,
रूड लागे लोटन निमूल कदलीनि लौं।
कहै 'रत्नाकर' बितुंड-रथ बाजी झुंड,
लुंड-मुंड लोटे परि उछरि तिमीनि लौं।।

हेरत हिराए से परस्पर संचित चूर,
पारथ और सारथी अदूर दरसीन लौ।
लच्छ-लच्छ भीषम भयानक के बान चले,
सबल, सपच्छ फु-फु कारत, फनीनिलौ॥[49]

*** * ***

नंद जसुदा की अडू गाय गोप गोपिका की,
बात वृषभान-बोनहु की जनि कीजियो।
कहे 'रत्नाकर' कहत सबै हा-हा खाई,
यहां के परपंचन सो नेक न पसी जियौ।
आसु भरि ऐहे और उदास मुख है हैं हाय,
ब्रज-दुःख त्रास की न बातें सांस लीजियौ।
नामको बताइ नैन-नीर अवगाहि बस,
स्याम सों हमारी राम-राम कहि दीजिए॥[50]

इस प्रकार ब्रजभाषा काव्य क्षेत्र में रत्नाकर जी का महत्वपूर्ण योगदान रहा हैं। कलापक्ष और भावपक्ष को मधुरता के साथ प्रस्तुत किया। भाषा भी माधुर्य ओज और प्रसाद गुणों से युक्त होती थी। अलंकारो को काव्य का गहना माना जाता है जगह-जगह पर इन्होंने शब्दालंकारों और अर्थालंकारो का प्रयोग किया हैं। छन्द, सवैया, रोला, कवित आदी की रचना करते ही रहे हैं। इन्हें प्राचीन संस्कृति मध्यकालिन हिन्दी-काव्य, उर्दू, फारसी अंग्रेजी, हिन्दी, आयुर्वेद, संगीत, ज्योतिष, तथा दर्शन-शास्त्र के भी जानकार थे साहित्य सुधा निधि और सरस्वती पत्रिका का तथा अनेक काव्य गंथों का संपादन में बी जुड़े रहे।

'गंगावतरण' में रीतिकाल में प्रयुक्त होने वाली ब्रजभाषा से सरल सहज रूप से प्रस्तुत की उदाहरण

मनौ हंस-गन मगन सरद-बादर पर खेलत,
भरत भांवरै जुरत, मुरत, उलहत अवहेलत।
कबहुं वायु सौ बिचलि बंक गित लहरति धावै,
मनहुं सेर सित बेस गगन तै उतरत आवै।[51]

मुहावरों का प्रयोग करते हुए रचना करने वाले कुछ ही कवि है इन में से एक रत्नाकर भी है इनका उदाहरण देखेगें जिसमें मुहावरे का प्रयोग कर ब्रजभाषा में सुन्दर रचना की है।

प्रेम अरू जोग मैं हैं जोग छठै-आठै परचौ।
जैह्वै तीन तेरह तिहारी तीन-पांच ह्वै॥[52]

प्रकृति को अलंकरण रूप में वर्णन कर अवलम्बन रूप में प्रकृति का सुन्दर चित्रण किया है। जिससे पता चलता है कि खड़ीबोली के युग में भी परम्परागत काव्य का पाठकों और कवियों में लगाव है।

विकसित विपिन बंसतिकावली कौ रंग,
लखियत गौपिनि के अंग पियराने मैं।
बौरे वृन्द लसत रसाल वरू वारिनि के,
पिक की पुकार है चबाव उमगाने मैं।
होत पतझार झार तरूनि समूहनि कौ,
बैहरि बतास लै उसास अधिकाने मैं।
काम-बिधि बाम की कला मैं मीन-मेष कहा,
ऊधौ नित बसत बसंत बरसाने मैं।[53]

इसके अलावा अनेको फूटकर छन्द लिखे है। जो इनकी प्रतिभा के परिचायक है।

12. सत्यनारायण कविरत्न

संवत् 1941 में अलीगढ़ जिले के सराय नामक गाँव में सत्यनारायण कविरत्न जी का जन्म हुआ। खड़ीबोली के युग में ब्रजभाषा के परम्परागत रूप को बनाय रखने में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा हैं। ब्रजभाषा कवियों में इन्हें 'ब्रज-कोकिल' के नाम से भी जानते हैं। भक्ति और प्रकृति से सम्बंधित ज्यादा रचनाएं रची। मूल रचनाओं के साथ अनुदित काव्यों की भी रचना की। 'देशभक्त होरेरास, उत्तररामचरित तथा मालती माधव नाटक महत्वपूर्ण हैं। भ्रमर दूत, आपकी प्रसिद्धकाव्य कृति हैं, तथा 'हृदय तंरग' आपकी स्फूट कविताओं का संग्रह हैं।

इन के द्वारा रचित कविता के कुछ उदाहरण (भ्रमर-दूत) दास्य भक्ति का सुन्दर चित्रण हैं।

बिलखाती, सनेह फुलकाती, जसुमति माई।
स्याम-बिरह-अकुलाती, पाती कबहु लन पाई॥
जिय प्रिय हरि-दरसन बिना, छिन-छिन परम अधीर।
सोचति, मोचति निसि-दिना, निसरत नैननु नीर॥[54]
बिकल कल ना हिये।

'पावस प्रमोद' में प्रकृति का सुन्दर चित्रण हैं।

कारे कजरारे मतवारे धुरवा धावत।
सुख सरसावत, हिय हरसावत, जल बरसावत॥
उछरि-उछरि जल-छाल छिरकि छिति छर-र-र छमकति।
चंचल चपला चमचमाति चहुधा चलि चमकति॥[55]

* * *

मोहन अजहुँ दया हिय लावौ।
मौन-मुहर कबलौं टुटेगी, हरे न और सतावौ॥
खबर बसन्त की कछु तुमको, बिरद-बानि बिसराई।
ऐसी फूल रहीं सरसों सी, तब नयनन में छाई॥[56]

(उपालम्भ)

'मालती-माधव' से अनुदित काव्य का उदाहरण

सब ओर जितै जित देखते हो, दृग मोहिनी मूरति भाइ रही।
चहुं बाहिर औ उर अन्तर में बहु रूप अनूप दिखाइ रही॥
खिले स्वर्न सरोज मनोहर को जिह आनन ओप लजाइ रही।
अति नेह सों मो-दिसि लाज-पगी निजदीठि कछु तिरछाइ रही॥ [57]

इनके काव्य की यह विशेषता रही हैं कि इन्होंने अपने लिए कुछ नही माँग अपितु देशवासियों के लिए माँगा, प्रकृति चित्रण में भी स्वच्छतावादी द्रष्टिकोण को अपनाते हुए प्रकृति के सुन्दर सौम्य वर्णन के साथ भयकर प्रचंड रूप को भी वर्णित किया। कलापक्ष की दृष्टि से इन्होंने अपने भावों को सुन्दर, सरल रूप से वर्णित किया। जीवन और जगत की परम्परा संकीर्णता का सुन्दर सरल सजीव वर्णन किया जैसे

पढ़ीन आखर एक, ज्ञान सपने ना पायो,
दूध–दही चारन में सबरी जनम गंवायो।
मात–पिता बैरी भये, शिक्षा दई न मोहि,
सबरे दिन यों ही गये, कहा कहे तो होहि॥
मनहि मन में रही।[58]

इस प्रकार 'सत्यनारायण कविरत्न'जी ने अपनी काव्य कला द्वारा आधुनिक युग में ब्रजभाषा के सौदर्य, माधुर्य को बरकरार रखते हुए अपनी काव्यकला का परिचय दिया।

13. डॉ. विष्णु विराट

वैसे तो आधुनिक युग के ब्रजभाषा के गर्भ से कई कविरत्नों का जन्म हुआ किन्तु आधुनिक युग पूर्ण रूप से साक्षात्कार करने के लिए जिस कवि ने आधुनिकता का अध्ययन करके ब्रजभाषा के वर्चस्व को बनाये रखने में जो अपना योगदान दिया वह अंत्यत ही सराहनीय है। उन की काव्य श्रंखला का स्वरूप ऐसे मुखरित होता हैं जैसे सुबह-सुबह की ओंस किसी गुलाब के पत्तों पर आकर ठहर सी गई हो।

आधुनिक ब्रजभाषा के इस दौर के कवि का नाम **'डॉ विष्णु विराट'** है। इन का जन्म 1 जुलाई 1946 को मथुरा में हुआ। बचपन संस्कार और ब्रजभाषा काव्य के माधुर्य वातावरण में पल्वलित हुआ। इन के पिता का नाम अधिकारी श्री बैजनाथ चतुर्वेदी था उन के अन्दर भी ब्रजभाषा के प्रति अपार आस्था भरी हुई थी और यही वजह थी कि विष्णु विराट अपने पिता श्री के पदचिन्हों पर चलते हुए ब्रजभाषा काव्य को एक नई दिशा की ओर अग्रसर करने में सफल हुए।

बचपन ब्रज में और शिक्षा के प्रति अपने आप को पूर्ण रूप से समर्पित करते हुए ब्रज का यह विद्यार्थी साहित्य और वैदान्ताचार्य में अपनी निपुणता को स्थापित करने में सफल हुआ। इन्होंने एम.ए. करने के पश्चात् आचार्य कवि गोस्वामी हरिरायजी के ऊपर शोधकार्य करके ब्रजभाषा के लिए अपने आप को समर्पित माना।

कवि डॉ. विष्णु विराट का व्यक्तित्व उनकी कृति के माध्यम से साफ नजर आता हैं उन्होंने साहित्य में गद्य और पद्य दोनों पर विशेष ध्यान दिया किन्तु ब्रजभाषा के प्रति प्रेम और माधुर्य को वह अपने जहन से निकाल ना सके और यही वजह रही

कि डॉ. विष्णु विराट की कृतियों में ब्रजभाषा के कई काव्य कृतियों का सर्जन करने के पश्चात् भी कई काव्य कृतियाँ उनके विचारों से निकलने के लिए तत्पर्य रहीं। उन्होंने अधिकतर कहानी, उपन्यास, समीक्षा, शोध ग्रन्थ, व्यंग्य, लेख और कविता आदि का सृजन किया। काव्य की आत्मा ब्रजभाषा ही उनकी मूल पहचान है। अतः ब्रजभाषा में ''फैली पलाश के कानन लौ'', ''विराट सतसई'', ''रंग बीथी'', और ''मोहि बीन के तारन में कसि लै'' जैसी उल्लेखपूर्ण रचनाओं को उन्होंने जन्म दिया।

काव्य की इस शृंखला में उन्होंने जो अपना योगदान दिया हैं वह परंपरा के साथ जुड़ते हुए एक नए अध्याय का निर्माण करता हैं सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक आदि आधुनिक युग को एक नई विरासत के लिए आह्वान करते हैं। उन की काव्य शैली की प्रधानता किसी शिल्पगत से कम नही हैं। सवैया, धनाक्षरी अमृत ध्वनि, चित्रकाव्य पद, दोहा आदि का उन्होंने सृजन किया इन की रचनात्मक, रागात्मकता की विशेषता यह है कि ब्रजभाषा को ना जाननेवाला भी अहिन्दी भाषी भी इनके द्वारा लिखित काव्य सृजन को बहुत ही सरलता से समझ सकता है समस्या के इस दौर में आधुनिकता का बोध एक नए आधुनिक युग की प्रधानता को व्यक्त करके आगे बढ़ाने में सहायक सिद्ध होता हैं। राष्ट्रीय मंचीय कवि के रूपमें ख्याति प्राप्त विराट जी आज जानित महाराजा सयाजीराव महाविद्यालय में अध्यक्ष के पद पर कार्यरत हैं और ब्रजभाषा को अपनी रचनाओं के माध्यम से पल्लवित कर उसकी माधुर्य की खूशबू को फैला रहे हैं। इन की रचनाओं के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं।

विराट जी की भक्ति रचनाएँ कृष्ण, राम, गणेश, शंकर, गंगा, यमुना चारों दिशाओं की तरह हर छोर तक फैली हुई हैं रसखान की तरह हर जन्म में कृष्ण या कृष्णभूमि का सान्धिय की अभिलाषा व्यक्त की है इसी प्रकार ''विराट'' जी भी ब्रज में कृष्ण के साथ गाय चराने की अभिलाषा व्यक्त की हैं। जैसे-

हौ नहिं भक्ति असक्ति में जूझत, हौ नहिं पास उपासन जैहौं।
हौं नहि ताप तपौं तप में, बन जाहिं कै ध्यान न देहौं।
आठहु जाम न मंदिर सेवहु, हौ न प्रसाद प्रयासन पैहौं।
साँच कहौं हौं सखा बनि कैं ब्रज साँवरे के संग गाय चरैहौं ॥[59]

''फैली पलाश के कानन लौ'' में भी इसी प्रकार अपनी भक्ति भावना को

प्रकट करते हुए ब्रज की महत्ता को प्रकट करते हुए कृष्ण की महिमा का वर्णन कर भक्ति भावना को प्रकट किया।

''ब्रज माधुरी में जहां गारी गवैं, जहां नेह बंध्यों नहि नीतिन में।
जहाँ हेरत स्यामहिं कौ जसुदा, उर प्रीति भरी रसरीतिन में।
जिनमें ब्रजबाम बिलौमैं महीं, मनमोहन नैन नचैं जिनमें।
जमुना तट बैठि के बातैं करैं, बसि जाहि इन्हीं ब्रजबीथिन में॥''[60]

एक तरफ अपनी भक्ति को प्रस्तुत किया तो दूसरी ओर विरह में डूबी नायिका का वर्णन भी पूर्ण भावों के साथ प्रस्तुत कर नायिका की वेदना को प्रस्तुत किया। नायिका को सावन और रात उसकी वेदना को बढ़ा कर नायक की याद दिला रहे हैं इस भाव का बहुत सुन्दर रूप से वर्णन करते हुए कह रहे हैं -

यै बिरहासुर आँख दिखावत, देखि सखी याकौ मूंछ मरोरिबो।
आग जगाइबौ सावन कौ, अरू जोग-सँजोगन कौ मुख मोरिबौ।
नागिन है गई रात बियोग की, या अबला पै बला घन धोरिबौ।
प्रीतम कौ मिलबौ भयौ जैसे अकाससहिं जाहि कैं बीजुरी तोरिबो॥[61]

इस प्रकार डॉ. विष्णु विराट के काव्य में परंपरा का पुट तो है ही साथ ही संस्कार और आत्मीयता की झलक भी परिलक्षित होती है।

डॉ. मूरलीधरन चतुर्वेदी के अनुसार **''ब्रजभाषा के आधुनिक कवियों में डॉ. विष्णु विराट का काव्य-देय सर्वधिक महत्वपूर्ण प्रतीत होता हैं। उनमें परम्परा की गरीमा भी है और नूतन के प्रति रूझान भी। परपरित रचनाएँ देखकर आश्चर्य होता है कि ब्रज में देव, घनानन्द, गंग रसखान, रहीम की कोटि की रचनाएँ डॉ. विराट की लेखनी से निर्झरित हुई है।''**

''मोहि बीन के तारन में कसि लै'' विराट जी की सुप्रसिद्ध रचनाओं में से एक हैं जिसमें राधा-कृष्ण और सीता-वनवास का बहुत ही सुन्दर सजीव चित्रण किया है। भाषा का सौदर्य इन की इस रचना में पूर्ण रूप से देखा गया है। पाठकों के समक्ष कृष्ण राधा की मनोहर चित्र को साक्षात रूप में प्रस्तुत कर देनेवाली इस रचना के कुछ उदाहरण द्रष्टाव्य है।

नंदलाल की सुन्हरी छवि को उनकी पैयजनियाँ, धोती, मोर पंख, द्वारा प्रस्तुत

किया है।

पैजनि पाँयनि में रूनझुन्न बँधी कटि फैंटि समौटि चलाकी।
काछिनी घेरि हीयैं घिरती, अधरान धरी यह बैनु बला की।
सीस पै मोर को पिच्छ सुहामनौ, आनन आव है चन्द्रकला की।
नैननि नेह झरयौ ही परै, हिय तैं न टरै छबि नन्दलला की॥[62]

इसी प्रकार कृष्ण-राधिका के प्रीत के अनुराग को दर्शाती यह

रूप की मचान बान-बान भई बेधन कौ,
कान्ह के गुमान कौं निदान भई राधिका।
मान भई मैन पै, सुचैन की बितान भई,
ब्रीत रसरीत कौ बखान भई राधिका।
आन अनुराग की सुपान सुख सौरभ की,
बोल-बोल बाँसुरी की तान भई राधिका।
स्याम भई स्याम के सनेह की सुगंध पाय,
मोह भरी मोहन प्रान भरी रभई-रधिका।[63]

कृष्ण-राधा के प्रीत का अनुराग तो दूसरी और सीता-वनवास के दर्द को भी अपने भावों द्वारा प्रस्तुत किया है उदाहरण - स्वरूप दृष्टव्य है।

महारानी बखानी फिरी जग में, अब दीन दसान मलीन भई।
सुख सौरभ में सरसी हरसी, दुख द्वन्दन में छबि छीन भई।
अवधेश कौ सेस असीस लियैं, अरधंग सीया बन लीन भई।
जिमि चंदहि चीर निचोरि सुधा, थकि चाँदिनी व्योम विलीन भई।[64]

नायिका के सौंदर्य का सजीव चित्रण शब्दों का सौंदर्य इन काव्य की पक्तियों में देखा जा सकता है।

सिर टेकत ही दधि की मटकी, बलखात हजार चलैं लहरी।
झड़ी झूलत साँस-उसांसन मैं, हिचकोलत ज्यों जल में सहरी।
धरती धरती पै नहीं पग जो, उड़ती सी रहै है पतंग परी।
कमनीय वही मनमोहन कौ, मन लै गई हाय छटाँक छरी॥[65]

इस तरह भक्ति और शृंगार में अपना कौशल्य दिखाते हुए ''विराट जी''

अनेक छन्दों, कवित्त की रचनाएँ रूपी हैं। जिसमें परम्परा के पुट को हम देख सकते हैं। देव, घनान्द, बोधा, तोष,ठाकुर जैसे श्रेष्ठ कवियों के काव्य जैसी मधुरता को हम विराट जी के काव्यों में देख सकते है।

आधुनिकता को भी अपने काव्य में पूर्ण रूप से प्रस्तुत करते हुए 'विराट जी'ने 'विराट सतसई' में 716 दोहों द्वारा हर क्षेत्रों जैसे सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक आदि की समस्याओं को बहुत सुन्दर व्यंग्यात्मक रूप में दर्शाया है। उत्पीड़न, शोषण, अन्याय, अनीति, दर्द, कुरीतियाँ, से जुड़े अनेक प्रश्नों द्वारा समाजिक चेतना को जागृत करने का प्रयास किया है। इनके कुछ उदाहरण द्रष्टव्य है।

रात बड़ी लम्बी भई, भोर न दीसत पास।
धीरैं धीरै रिस रह्यौ, मन भीतर बिसवास।।[66]

*** * * * ***

कुर्सी पै कुर्सी चढ़ी, चढ़ौ चाम पै चाम।
या उधार के चाम कौ, कैसौ ऊँचौ दाम।।[67]

*** * * * ***

सुनि 'विराट' या कलम मे, डार खून कौ रंग।
अब न रोकिबै सौं रूकै, अधिकारन की जंग।।

*** * ***

तीन दिए, तेरह गिने, लिखे तिरासी नाम।
बड़े जोर सौ है रहे, राहत काम तमाम।।[68]

इस प्रकार आधुनिक काल के ब्रजभाषा कवियों में डॉ. विष्णु विराट जी ने अपने नाम की सार्थकता को प्रस्तुत करते हुए काव्यक्षेत्र में अपनी विराट काव्य प्रतिभा का परिचय दिया हैं

डॉ. जगदीश गुप्त, स्व श्रीनारायण चतुर्वेदी, डॉ. विद्यानिवास मिश्र, डॉ. नामवर सिंह, पद्म श्री गोपाल प्रसाद व्यास, डॉ. विजयेन्द्र स्नातक, प्रो. कैलाशचन्द्र भाटिया प्रो. कृष्ण दत्त वाजपेयी, प्रो. अम्बाशंकर, प्रो. कुंज बिहारी और सोमठाकुर जैसे व्यक्तियों ने इनकी काव्य प्रतिभा की प्रशंसा करते हुए लिखा है। जैसे प्रो. अम्बाशकर नागर ने लिखा है -

आखर के गढ़िया बढ़िया सुकवि हैं विराट विष्णु,
ऐसे गुनिन कौ गुजरात में नागर निवाजियौ।[69]

विराट जी को ब्रजभाषा शिखर सम्मान-नाथद्वारा, भारतेन्दु सम्मान कोटा, श्रीधर पाठक पुरुस्कार लखनऊ, आशीर्वाद पुरुस्कार मुम्बई, साहित्यकार सम्मान जयपुर, साहित्य वारिधि अलीगढ़ साहित्य श्री रावट भाटा जैसे सम्मानों से अलंकृत किया गया है।

आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक के कवियों ने अपनी भक्ति भावना को अलग-अलग रूपों में व्यक्त किया है। कभी ईश्वर को सखा के रूप में माना, कभी कवि ने अपने आप को दास मानते हुए रचना रची तो कभी ईश्वर की विविध लीलाओं के माध्यम से अपनी भक्ति को प्रकट किया। ये प्रकार भक्ति के नवधा प्रकार में समाविष्ट हैं। जैसे सूरदास जी ने कृष्ण को सखा मानते हुए उनकी हर एक लीला का वर्णन किया, तो दूसरी और तुलसीदास जी ने अपने आप को राम का दास मानते हुए रचना की है।

इसी प्रकार आधुनिक ब्रजभाषा कवियों ने अपनी भक्ति भावना को विभिन्न तरह से प्रस्तुत किया है। जैसे -

डॉ. विष्णु विराट जी ने अपनी भक्ति भावना का साकार रूप में तप, उपवास, व्रत को छोड़ सिर्फ कृष्ण के सानिध्य की इच्छा प्रकट की। जैसे निम्न कवित्त में उन्होंने उपवास व्रत, तप, ध्यान और मंदिर प्रसाद को ना अपनाकर कृष्ण को सखा के रूप में ग्वाल बनने की इच्छा प्रकट की है।

हौ नाहि भक्ति आसक्ति में जूझत, हौ नहि वास उपवास जैहौ।
हौ नहि ताप तपौ तप में, बन जाहि कै ध्यान ने देहौ।
आठहु जाम न मंदिर सेवहु, हौ न प्रसाद प्रयासन पैहौं।
साँच कहौं हौ सखा बनि कै, ब्रज साँवरे के संग गाय चरैहौं।[70]

कवि लाल बलवीर जी ने अपने आप को दास बताते हुए भक्ति भावना को दर्शाया है। इस कवित्त में बलवीर जी अपने आपको दास बताते हुए कहते हैं कि अगर आप दीन दयाल हैं तो मुझपर दया करो मुझे चकोर समझकर अमृत रस का पान कराए मुझे किसी भी रूप में अपना दास बनाकर मुझ पर कृपा करो। उदाहरण दृष्टव्य

है।

तुम दीन दयाल कहावत हो, कुछ दीनन की सुधि लैवौ करौ,
झलकाइ के रूप सुधाधर सों, हमें जानि चकोर चितैवौ करौ॥
बलवीर जो पाइ सरूप भलौ, हंसि हेरि सदा दरसैवौ करै,
तुम लैवौ करोमन भावै सोई, मुख माधुरी तान सुनैवौ करौ॥[71]

रक्षक के रूप में कृष्ण को वर्णित कर **'कविवर पं. रामचन्द्र मिश्र चन्द्र जी'** ने भक्ति भाव को निम्न कवित्त में दर्शाया है और विनंती करते हुए कहते हैं जिस प्रकार नाग से रक्षा कर, ऊँगली पर पर्वत धारण कर, राक्षसों से गोप-गोपियों की रक्षा कर अपने भक्तों को बचाया उसी तरह मेरी भी रक्षा करो। कवित्त इस प्रकार है।

'काली को नाथि पान दावानल कीयौ,
नख पर गरिवर उठाय ब्रज बचायं लीयो।
गाय गोपहित नास्ति कीनी असुरन की,
सोई व्रजराज करो रक्षा मो जन की॥'[72]

भक्ति को बीभत्स रूप और भयानक रस में प्रस्तुत करते हुए लिखा है। दोहा दृष्टव्य है।

व्रज दुष्ट मारे रहे, स्वान सात सो बीस।
कारि भारि तन खात हैं, तायें तिनको मास॥[73]

विरहणी की तरह अपने दर्द को प्रभु के वियोग को 'कविरत्न नवनीत जी' लिखते हैं कि हरि के वियोग का दर्द किसी से छुप नहीं सकता, मैं एक पल भी मेरा मन नहीं लगा रहा आँखों से निरुत्तर आँसुओं की धारा प्रवाहित हो रही है। खाना-पीना सब भूल गया हूँ जिस प्रकार चातक की प्यास स्वाति की बूँद से बुझती है, उसी प्रकार आपके दर्शन से चैन मिलेगा। इस प्रकार हरि वियोग की व्यथा को निम्न कवित्त में दर्शाया है।

कल न परत तरसत प्रान प्यारे बिन, बिरह बिथा के दुःख छिपत न कोई सौ।
कहैं 'नवनीत' एक पलहू न लागै पल, टपकत आँशु लै उसास दृग दोईसौ।
भूलि जात भपोजन, भुवन सुख सागरलौ, चातक की प्यास तौ बुझैगी स्वाँति तोई सौ।
धीर न धरत, कुल कानि जाति ताही छिन, जब मन लागी जात कांहू निरमोहीसौं॥[74]

काव्य में विलोमोक्ति के द्वारा अपनी भावना प्रकट करना एक अनुठा कार्य है ब्रज काव्य का यह विशिष्ट गुण है 'डॉ. सोम ठाकुर' जी ने इसी कला का उपयोग करते हुए अपने काव्य में सौदर्य को निखारा। विलोमोक्ति में कवि ने कृष्ण के श्यामवर्ण पर राधाका गौर वर्ण का रंग चढ़ गया है चूकिं काले रंग पर कोई रंग नही चढ़ता किन्तु विलोमोक्ति द्वारा कविने यह चमत्कार किया। कवित्त दृष्टाव्य है।

नित काटत बंधन मोहन के, सोई मोहन मंत्र मढ़यौ हम देख्यौ।
बर बैनन नैनन सैनन में, दिन रैन सनेह बढ़यौ हम देख्यौ।
चितचोर के चित्त पै राधिका कौ, चलचित्र विचित्र कढ़यौ हम देख्यौ।
कहै स्याम पै दूजी ने रंग चढ़ै तापै गोरी को रंग चढ़यो हम देख्यो॥[75]

जहां सोमठाकुर जी की विमलोमोक्ति की रचना है। वही दूसरी ओर हमें ऐसे कवित्त भी मिलते है जहाँ कृष्ण को राधा, राधा को कृष्ण का रुप दिया गया है। जो अपने आप में काव्यक्षेत्र में काव्य को अनोखा सौदर्य प्रदान करता है। डॉ. विष्णु विराट जीने ऐसे ही कवित्त की रचना कर लिखते है जिसमें राधा कहती है कि मैं मोर पंख लगा लू और तुम्हे घूघट पहना दू, तुम्हारी बांसूरी में बजाऊँ अपने कंगन तुम्हें पहनाऊ तुम्हारा पीताम्बर मेरा और ओढ़नी तुम्हारी में नन्द और तुम राधिका बन जाओ। बानगी इस प्रकार है

तू मोंहि मोर के पंख लगाय दै मैं तोहि घूघट काढ़ि सजाओ।
तू मोहि बाँसुरी दै मनमोहन, मै कर कंगन तोहि धराऔ।
पीत पीताम्बर बाँधि हौ मैं, तोंहि ओढ़िनी साजि सँवारी उठाऔ।
मै नँदनन्दन, तू राधिका होई तौ तौसौं पुराने हिसाब चुकाओ॥[76]

ईश्वर के सानिध्य का महत्व दर्शाते हुए डॉ. जगदीश गुप्त ने कहां हैं कृष्ण का साथ हैं उसे किसी की परवाह करने की जरुरत नही उसके दुःखो का अन्त हो जाता है उदाहरण द्रष्टाव्य है।

काहू की नैकु अहै परबहाह न, संग रहे चरवाहन के हौ।
साँची गुपाल कहै हम तौ, तुम जोग न नेह निवाहन के हौ।
दाहिने है अब बाम भये, घनस्याम भये कहा दाहन के हौ।
आह कराह न बेध तुम्हें, तुम आहन के हौ कि पाहन के हौ॥[77]

आधुनिक ब्रजभाषा के कवियों ने परम्परागत रूप को पालन करते हुए कृष्ण के बाल्य रूप के सौंदर्य, उनकी बाँसुरी का वर्णन करते हुए भक्ति की भावना को प्रस्तुत किया। पं. गिरधर शर्मा 'नवरत्न' जी ने कृष्ण की बाल लीला का वर्णन इस प्रकार किया है कि सूरदास के बाल कृष्ण की स्मृति को जगा दें। उदाहरण इस प्रकार हैं।

दधि दूध ही खायो है चोरी न की,
कछु हाथ लगायो है माखन में।
तिहि पै सब ग्वालिनियां मिलि के,
मोहि लाई दबा भरि बाहन में।
तुमहूँ इन डोरिन बाँधति हो,
कही स्याम स्वगात सों माखन में।
हमकौ समबको सुख दो तब जो,
झलके अंसुवा हरि आँखन में।।[78]

कृष्ण की बाँसुरी को रूपक के रूप में दर्शाते हुए बाँसुरी को भाग्यशाली बताया है कि उसे कृष्ण के होठ तकिये की तरह है जहाँ बाँसुरी रहती है और कृष्ण अपनी अंगुलियों से उसके पैर दबाते हैं। फिर भी बाँसुरी को नींद नहीं आती। इस तरह नवनीत चतुर्वेदी जी ने बहुत ही सुन्दर ढंग से ब्रजभाषा में इस प्रकार लिखा हैं।

ब्रज जीव न के तकिया करि, कूलन फूलन सेव बिछावत है
अति कोमल सुन्दर 'नीत' मनो अलका बलि बाने दुरावत है
अँगुरीत सो चांपत पाव दई तू तरैऊ मोद मनावत है।
इतने सुख सों मतवारी री, बंसुरी तोइ नींद न आवत है।।[79]

इस प्रकार आधुनिक ब्रजभाषा के कवियों ने विभिन्न तरह से भक्ति भावना को प्रस्तुत किया। ब्रज का नाम आने पर हमेशा कृष्ण ही ध्यान में आते हैं किन्तु ब्रजभाषा में सिर्फ कृष्ण, राधा और उनकी लीलाओं के अलावा शंकर, राम, सीता, गंगा, जमुना, नर्मदा, वल्लभाचार्य और चैतन्य प्रभु आदि देवी-देवताओं का वर्णन कर भक्ति भावना को प्रस्तुत किया। वर्ण्य-विषय की विविधता हर कवियों के काव्य में पाई गई हैं।

जैसे 'कविरत्न नवनीत चतुर्वेदी' जी का भक्ति काव्य पुष्टिमार्ग से प्रभावित है तो दूसरी ओर पुष्टिमार्ग से इतर रचनाएँ भी हैं। 'यमुना छप्पन भोग' रचना में विविध

प्रकार की सामग्री के नाम को दर्शाया है और अपना वल्लभ संप्रदाय के प्रति अनुराग को व्यक्त किया। उदाहरण इस प्रकार है।

'बूँदी और जलेबी खुरमा। सकरपार मठरी रस तरमा,
मावा और मनोहर केरे, मेवो परे चूरमा हेरे॥'[80]

'भारतेन्दु हरिशचन्द्र' जी ने यमुना के प्रति अपने भक्ति भाव को प्रगट करते हुए यमुना के सौंदर्य, प्रकृति के रंग को दर्शाया है। उदाहरण इस प्रकार हैं।

तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाये।
झुके फूल सों जल-परसन हित मनहु सुहाये॥
किधौ मुकुर मैं लखत उझकि सब निज-निज सोभा।
कै प्रनवत जल लानि परम पावन फल लोभा॥[81]

वही दूसरी ओर हमें 'डॉ. विष्णु विराट' जी ने यमुनाजी के उदगम स्थल से शिव के केशो की तुलना करते हुए बहुत सुन्दर वर्णन किया है कृष्ण के चरणों में आकर बस गई है। इस प्रकार कृष्ण की महिमा बताते हुए यमुना के महत्व का वर्णन किया है। कवित्त द्रष्टव्य है।

वह लाई भगीरथ के प्रनसौ, यह छोड़ि हिमादि चलीं महारानी।
वह संकर सीस कसिकैं, यह तौ घनश्याम की प्रेम दीवानी।
भटकै ही इतैं उतै बाबरी वो, यह आई बसी ब्रज में लहरानी।
पगघोइ के गंग उपासि थकी, पै हिये हरि के यमुना महारानी॥[82]

इसी प्रकार दास्य भक्ति के रूप में 'कवि सेनापति' जी ने राम भगवान की आराधना की है। तुलसीदास जी ने जिस प्रकार राम पर अपना सर्वस्व निछावर किया उसी प्रकार सेनापति जी ने पूरे ब्रह्माण्ड को चलाने वाले के लिए यह कवित्त की रचना की।

'परम ज्योति जाकी अनंत रमि रही निरंतर
आदि, मध्य अरु अंत, गगन, दसदिस बहिरंतर।
गुन पुरान-इतिहास, वेद बंदीजन गावत
धरत ध्यान अनावरत, पार बृम्हादि न पावत।
सेनापति आनन्द-धन-रिद्धि-सिद्धि मंगल-करन।

नाइक अनेक ब्रह्माण्ड को, एक राम सतत-सरन॥'[83]

राम के सौष्ठ के वर्णन के साथ ब्रजभाषा काव्य में सीता वनवास की वेंदना के स्वर भी सुनाई देते हैं। डॉ. विष्णु विराट जी ने अपनी कृति 'मोहि बिन बीरन के तारन मे कसि लैं' में सीता वनवास के करुण भावों को प्रस्तुत किया है जिसका उदाहरण दृष्टव्य है।

'महारानी बखानी फिरी जग में, अब दीन दासन मलीन भई।
सुख सौरभ में सरसी हरसी, दुःख द्वन्दन में छबि छीन भई।
अवधेश कौ सेस असीस लियै, अरधंग सीया बन लीन भई।
जिमि चंदहि चीर निचोरी सुधा थकि चाँदनी व्योम विलीन भई॥'[84]

ईश्वर की उपासना में सिर्फ राम, कृष्ण ही नहीं इसके अलावा गणेश, सरस्वती देवी, वंदना, गिरिराज वंदना, द्वारिकाधीश वन्दना वल्लभाचार्य चैतन्य प्रभु, गोवर्धन आदि की भी भक्ति करते हुए दोहों, कवित्त की आदि रचनाएँ कीं।

विघ्नों को हरने वाले, मोदक का सेवन करने वाले रिद्धि-सिद्धि के देवता गणेश जी वन्दना करते हुए पं. यमुना चतुर्वेदी 'प्रीतम' जी ने उनको प्रणाम करते हुए लिखा है।

बिघन बिदारिबे कौ सगुन सुधारिबे कौ,
अधन उधारिबै कौ जाकौ नित्य काम है।
मोद के मनाइबे कौ मोदक के खाइबे कौ
सौघ के सुझाइबे कौ गुन अभिराम है
विद्या बुद्दि रिद्धि-सिद्दि भुक्ति मुक्ति दैवे ही कौ
परिगौ सुभाव सदा ललित ललाम है।
'प्रीतम' पियारे प्रान ग्यान गुन बारे ऐसे,
देव गनराज जू को सतत प्रनाम है॥[85]

शिव सब का कल्याण कराने वाले हैं। ब्रह्माण्ड की सृष्टि करने वाले इस प्रकार का भाव दर्शातें हुए कविरत्न गोविन्द चतुर्वेदी जी ने शिव के द्वारा सवर्धन के कल्याण की काँक्षा की है। उदाहरण इस प्रकार है।

कमल चरन कंचन वरन, कटि काँची कुच हार।

दृग कज्जल कल हंस गति, लिलता विपति विदार॥[86]

इसी तरह शिव को देवाधि देव महादेव की अपरंपारती को ब्रह्मादि देवों से अगम्य मानते हुए कविवर ज्ञानी बिहारीलाल जी ने एकादशी कालव्य संग्रह में कवित इस प्रकार लिखा है।

'पावत न पार जो पै माहिमा तुम्हारी तऊ,
कीन्ही जौ प्रशंसा सो तौ योगताई लहैगी।
काहे ते कि विधि आदि देवहू न पायौ,
पार तिनकारी श्लाधा सो का विफलता गहेगी॥
याही तै अमर नर सोच के बखानी सवै,
निजनिज अनुसार घी कीरती छहेगी॥
है हरजू मेरी विनय यही है सत्व बीच,
स्तुति ये अदोष दया रावरी रहैगी॥'[87]

स्व. कविराम लला 'ललाकवि' ने भक्तिभाव के साथ नीति का समावेश करते हुए अपने भावों को प्रकट किया। जिसका उदाहरण इस प्रकार है।

राजन कौ राज महाराजन कौ महाराज,
जदुराज राज की निवाज निधि बन्दौ मैं।
'लला कवि' द्वारकापुरी की प्रतिभा की पुंज,
सदन सनेह की विभाज निधि बन्दौ मैं॥
ताज निधि बन्दौ सुखसाज निधि बन्दौ मैंगाज,
निज जन काज की निवाज निधि बन्दौमै।
कौरव समाज बीच राखी द्रोपदी की लाज
ब्रजराज प्यारे की विराज निधि बन्दौ मैं॥[88]

कवि गोविंद चतुर्वेदी जी ने उपासना के प्रसंग में भी संयोग श्रृंगार की सुन्दर रचना कर भक्ति में श्रृंगार का पुट दर्शाया है बानगी इस प्रकार है।

उग्र उमा उदवाह तन, उदित पुलक नत माथ।
कहत कितै शीतल अंहौ, तुहिना चल तब हाथ॥[89]

इस प्रकार भक्ति परक काव्य आधुनिक काल के कवियों ने रच कर अपनी

परम्परा का निर्वाह तो किया साथ ही यह भी साबित कर दिया कि भक्ति किसी काल सीमा में बंध कर नहीं रहती वह तो कवि के हृदय में स्थित ईश्वर के प्रति वह भाव है जो कवि किसी भी समय शब्दों द्वारा प्रकट कर देता है।

इसी प्रकार श्रृंगारिक काव्य भी रच गया जिस में नायक-नायिका का प्रेम, विरह और सौदर्य दिखाई पड़ता है। आलम्बन उद्दीपन दोनों ही रुप में श्रृंगारिक काव्य मिलता है।

'कवि नवनीत चतुर्वेदी' जी के काव्य में नख-शिख, अंग सौंदर्य, श्रृंगारिक प्रसादान, नायिका की विभिन्न अवस्थाएँ, एवं चेष्टाए संयोग श्रृंगार, वियोग श्रृंगार और प्रकृति चित्रण द्वारा अपने काव्य में रीतिकाल के कवियों जैसी चमत्कार उत्पन्न किया है।

यहाँ चतुर्वेदी जी ने नायिका की मानसिक स्थिति एवं आवेगों के चित्र उपस्थित करते हुए छंद में प्रिय के वियोग में नायिका इतनी आतुर एवं बैचैन है कि कहीं भी दवराजा खुलने या बन्द होने की आवाज पर वह दौड़कर उस ओर जाने लगती है उसकी आँखों को अपने प्रिय के दर्शन बिना चैन कहाँ ? छंद इस प्रकार है

कौन उपाय करौ दिन में रजनी में कहाँ रति रंग खिलाऊ
त्यौ 'नवनीत' चितै चुटकी चख वाहि चहूण चकडोर किराऊ।
काम खिलौनन की भरमार वियोग के झुझना दूर बजाऊष
चाहे के चौहट पै मचल्यौ मन मालक कौन सी भाति मनाऊ।।[90]

इस प्रकार डॉ. जगदीश गुप्त जी ने काव्य में श्रृंगारिकता को प्रस्तुत किया है।

मारि गयौ पिचाकारी अचानक थोरी सरीर पै, थोरी हिये में।
भीजि गई सगरी अँगिया, रसधार वही बरजोरी हिये में।
चोरति प्रीति, निचोरति चीर, संकोचति-सोचति गोरी हयि में।
भाल अबीर, गुलाल कपोलन, नैनन में रंग, होरी हिये में।।[91]

नायिका के सौदर्य का बहूत ही सुन्दर चित्रण करते हुए 'डॉ. विष्णु विराट'जी नायिका की मोतियों से भरी मांग को झरना, हँसी की सितारो से तुलना करते हुए 5 सुन्दर चित्रण किया हैं।

झरना न झरैं गिरि गौखन सौ, हमने यह मोतिन माँग भरी है।

हँसि दीनी हमी मधुरी हलके, बस याही सौं रात सितारे जड़ी है।
यह बीजुरी व्योम में नाहि सखी, आँखियाँ अँखियाँन सो जाय लड़ी है।
यह बाढ़ नदी में नही सजनी, हमरे हिय में परतीतत बढ़ी है।[92]

आधुनिक काल के कवि श्रृंगारिक वर्णन में सिर्फ नायक नायिका के सौदर्य और प्रेम में ही नही डूबे रहे बल्कि उन्होंने समसामयिक परिस्थितियों पर व्यंग्य परक वर्णन करते हुए श्रृंगारिकता के साथ हास्य का मेल करते हुए कविरत्न गोविंद चतुर्वेदी जी ने प्रस्तृत किया है। उदाहरण इस प्रकार है।

जुलमिन थानेदार की, बिटिया अति सतरात।
बिन अपराधहु के सहज, टांग देत इतरात॥[93]

इस के अलावा अनेक विषयों पर काव्य की रचना की जो हमारी परम्परा संस्कृति से जुड़ी हुई है। जैसे प्रकृति के रंगो, ऋतुओं के सौदर्य को दर्शाया, तो कही ब्रज की महिमा का गुणगान किया, तो कभी हमारे महान व्यक्तित्वों की प्रशंसा की। अर्थात परम्परा का निर्वाह भी किया साथ ही समाज को जागृत करना सामाजिक चेतना लाने में भी कवियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

'श्री सोम ठाकुर' जी ने ब्रज की महिमा को प्रस्तुत करते हुए स्याम, राधिका, बलराम को आधार माना है। अर्थात ब्रज का महत्व, कृष्ण, राधा, बलराम के यहां निवास करने से माना है। बानगी द्रष्टाव्य हैं।

'सुरराज के राज समाजन में, चरचा नित यै ब्रजधाम की है।
ब्रज अंचल के नभ मंडल में रटना नित स्याम के नाम की है।
कहूँ राधिका रुप की छाई छंटा, कहूँ बासना रास ललाम की है।'[94]

जहाँ कृष्ण राधा के द्वारा ब्रज की महिमा को दर्शाया, वहीं दूसरी और पं. रामगोपाल 'गुपाल कवि' ने सूर ब्रज के अति भक्त थे, और पक्षी, जमुना गो, ग्वालों के माध्यम द्वार ब्रज राज और भूमि की महत्ता को दर्शाया है। उदाहरण द्रष्टाव्य है।

'समता न मराल लहे उनसे, खग जो जमुना तह तेन टरे,
मन कामद गो सकुचे तिनतें जो गऊ वन कामद में विचरें।
धिक देववधू लखि भाखत हैं जब ग्वालिन गोकुल रास करे,
सुर 'सुर' लदजें उन लोगन ते, जो सदा ब्रज की रज में विहरे॥'[95]

इसी प्रकार प्रकृति के विविध रुपों का चित्रण भी किया है। पं. सत्यनारायण ने होली के अवसर पर बसन्त का स्वागत करते हुए लिखा है।

कोऊ सरसों सुमन फूल जौ सिर सों बाँधत
गरियारिन गोरी संग कोऊ चुहल मचावत॥
कोऊ बाबर भये गुललहि गगन उड़ावत।
करि भगुवारन लाल, गीत फागुन के गावत॥[96]

इस प्रकार ब्रजभाषा के काव्य को विविध तह से अपने कौशल्य द्वारा दिन प्रति दिन सँवारते हुए कवियों ने परम्परा का निर्वाह किया साथ ही विषय को नए रुप में प्रस्तुत कर काव्य को नया आयाम दिया। दोहा, कवित्त, छन्द, कुण्डलियां, और सवैयों की रचना तो की साथ ही मुक्तक रुप में भी लिखना प्रारंभ कर दिया 'मोहि बिन के तारन में कसिं लै' विष्णु विराट जी की रचना इस का मूर्त उदाहरण है।

काव्य जगत में काव्य के विषय समय, परिस्थितियों के अनूरूप प्रवाहित होते रहते हैं यह समय-समय पर बदलते रहते हैं कवि अपने काल के इन्हीं परिवर्तनों को देख परख कर अपने शब्दों के द्वारा रच कर लोगों तक अपने भावों विचारों को प्रस्तुत करता हैं जैसे भक्तिकाल में भक्तिपरक रचनाएँ, रीतिकाल में श्रृंगारिक रचनाएँ यह प्रवाह बढ़ते-बढ़ते इस कगार तक पहुँच गया कि लोग अब इन भावों, कल्पनाओं से दूर वास्तविकता के साथ चलना चाहते थे इस समय आधुनिक काल का आरम्भ हुआ साथ ही भाषा साहित्य में भी खड़ीबोली अपना प्रभुत्व जमाने लगी।

किन्तु ब्रज साहित्य के कवियों ने भी हार नहीं मानी उन्होंने भी कृष्ण-राधा, नायक-नायिका से भरपुर काव्य की जगह सामाजिक स्थिति, रीति-रिवाज, परम्पराओं, पाश्चात्य का विरोध, सामाजिक कुरितायाँ, भष्ट्राचार, राजनीतिक कुचको, घूसखोरी, बेरोजगारी, जनसंख्या वृद्धि और आर्थिक दशा की और ध्यान देते हुए आधुनिक विषयों पर अपने भावों विचारों को प्रस्तुत किया जिन में आधुनिक कवियों ने अपना कर्तव्य बखूबी निभाते हुए ब्रज भाषा को नए कलेवर के साथ रचा। हम विविध आधुनिक विषयों के उद्धारणो को प्रस्तुत करते हुए ब्रजभाषा के कवियों के शिल्प को देखगे।

'मँहगाई और वेतन' पर व्यंग्यात्मक रुप से लिखने वाले डॉ. लक्ष्मी शंकर

मिश्र ने अपनी रचना निशंक (लखनऊ) की 'बांसुरी' कविता संग्रह में एक आम आदमी की समस्या को दर्शाया है, उदाहरण द्रष्टाव्य है।

ज्यों ज्यों बढ़ावत वेतनमान
त्यों चटार गुनी महंगाई बढ़ावत।
बीज और पानी न मिलै किसान कौं,
यूरिया खाद हू ब्लैक में पावत।
भाषण दैकैं हरो दुख द्वन्द,
नए कर भार की योजना लावत।
पोसि अमीरी रहे तौ गरीबी-
मिटावै कौ काहै वसंत बनावत॥[97]

इसी प्रकार 'कविरत्न गोविन्दजी' ने भी महँगाई के प्रति अपने द्रष्टिकोण को प्रकट करते हुए कहा है कि हवा में भी मंहगाई की पीड़ा को महसूस किया जाता है। उदाहरण द्रष्टाव्य है।

सुखद समीर है न सुख मै सरीर है न,
पीर महंगाई की समाई लोकलाज की।
सुकवि 'गोविंद' कविताई का बनावै, नई
दीखत न देस में निकाई सुभ सान की।
आवैगो समाजवाद छाविगौ छिती पै छवि,
दलित दुरेफ हर सावन समाज की।
रोटी और लगोटी की समस्या सुरझाइ नाहि,
आई है समस्या पै अवाई रितु की॥[98]

जहाँ मँहगाई और वेतन पर व्यंग्यात्मक रुप से दर्शाया वही दूसरी और मँहगाई के मध्यमवर्ग पर पड़ रहे प्रभाव को 'डॉ. विष्णु विराट' जी ने इस प्रकार दर्शाया है।

'मध्यमवर्ग गृहस्थ के, बड़ै बुरे है हाल।
निकसे निकसे दाँत है, पिचंके पिचके गाल'
महँगाई ऐसौ बढ़ी, जैसे छोरी ज्वान।
आमदनी की बात तो, ज्यौ मुरगी के कान॥[99]

मँहगाई की मार ने भष्ट्राचार को जन्म दिया इसी को कवियों के इस प्रकार लिखा है। किताबों फाइलों में योजनाएँ बंद है। सिफारिशों का बोलबाला है। इसी को विराट सतसई में विष्णु विराट जी इस प्रकार लिखा है।

योजन योजन घूर है, दूर दूर तक सून।

अब सड़ाध देवे लगौं, बे मौसम कौ खूँन॥[100]

* * *

टका-टका से बैगना, आज सभए अनमोल।

नीम करेला चढ़ि गए, वे मिसरी से बोल॥[101]

जैसे-जैसे समय का चक्र चल रहा है वैसे-वैसे आधुनिक युग में जाति द्वैष की भावना, विश्व क्लेश की परिस्थितियाँ, पाश्चात्य संस्कृति और शहरीकरण का बोलबाला हो रहा है। इसलिए कवियों ने अपनी राष्ट्रीय एकता की भावना आम व्यक्तियों के हृदय में जागृत करने के लिए ब्रजभाषा का सुन्दर प्रयोग कर लोगों को देश का दर्पण दिखाने का कार्य किया है।जहां कवियों ने राजनीतिक हथकडों की पोल खोली है। वही पर लोंगो की स्वार्थ भावना और समाज पर पड़ रहे प्रभाव को भी शब्दों के माध्यम से दिखाया है। जैसे-

कविवर **पं. रामचन्द्र मिश्र 'चन्द्र'** जी ने सामाजिक दुर्दशा का करुण चित्र खींच कर चार पंक्तियों में ही मानवीय जीवन का यर्थाथ चित्रण किया है।

चित्रित चित्र जातीय दृश्य को चित्र एक दिन।

भयौ अचानक आय लाइ रुपक बहु गिन गिन।

ताहि देखि घबड़ाय उठि गयौ विपिन की ओर।

ध्यान भग्न तदापि न भयौ भयी हृदय सरवोर॥[102]

वही दूसरी ओर समस्या पूर्ति के सम्राट प्रभुदयाल 'दयालुजी' ने आज के युग पर सटीक चित्र प्रस्तुत किया है जिसमें धर्म के नाम पर हो रहे अधर्म को अपने विचारों द्वारा रचा है।

'अब धर्म के नाम अधर्म महा, सत् पंच कुकर्म सो खोय रही।

परतीत के लायक पात्र नही, सन् मितता तो मुख गोय रही॥

व्यभिचारी, गुआरी लवार बढ़े, नयकान की जै अब होय रही।

लख कूर कुव्यालित की करनी, कवि की प्रतिभा अब सोय रही ॥'[103]

जिस प्रकार सामाजिक दूर्दशा और धर्म के नाम पर अधर्म को उजागर किया उसी प्रकार कविरत्न नवनीत जी ने इस के कारण अंग्रेज के प्रति धृणा को भी दिखाया हैं। जिन्होंने भारत को सोने की चड़ियाँ से भ्रष्ट सिंहासन की संज्ञा में बदल दिया। अंग्रेजो के बुरे व्यक्तित्व को अपने शब्दों में ढ़लते हुए लिखा है।

लूटे देस देस के नरेसन कौं दंड लै कैं।
टिकट लगाई घर घड़ना कमू ले गए ॥
बीस-बीस खोलिकैं कचैरिन के कारखाने।
पूरे पापी अफसर पुलिस हु के हवै गए॥
चुंगी और चबूतरा में इज्ञत बिगार दैय।
लेंय घूंस पद्यड़ बिचारे घनै दै गए॥
ऐसो ये समैं आयो रहिबो हु कठिन भैया॥
हाकिम अंग्रेज हू हराम जादे व्है गए॥[104]

जहाँ नवनीतजी ने अपना राष्ट्रप्रेम अंग्रेजों के चरित्र-चित्रण द्वारा किया, वही दूसरी और कविरत्न गोविन्दजी ने अपने राष्ट्र प्रेम को ब्रज भाषा के प्रति प्रेम, राष्ट्रभाषा के प्रति अपने प्रेम, तिरंगे झड़े के प्रति प्रेम और स्वतंता सेनानियों के स्मरण कर अपनी राष्ट्रभक्ति को व्यक्त किया, बानगी द्रष्टाव्य है।

झंडे के प्रति प्रेम

आवत सुतंत्र जनतंत्र गनतंत्र राज,
भारतीय नेततन पै लागै फूल बरसन।
त्रिगुन तिंरग संग संगम त्रिवेनी दिखे
सुकवि गुविंद जू त्रिदेव लागे हरषन।
त्रिबरन सूचक त्रिदेव हैं, त्रिलोक माँहि
मेटक त्रिताप त्यौं प्रताप लागे परसन।
चक्रित हैं चौंकि चक्रवति हू कौ केतु झुक्यौ,
चक्रजुताचौकि धरम धुजा की देखि करकीन॥[105]

भाषा के प्रति प्रेम को व्यक्ति कर नवनीतजी ने राष्ट्रभाषा का आदर करते हुए

इस प्रकार लिखा है।

लच्छ लच्छ लच्छन ते लच्छिन विलच्छिन जो,
अच्छ अति उचित विचार सुकवी कौ है।
विहित विशिष्ट सिष्ट कौ समाष्टि पष्टि,
साहित 'गुविंद' हित साधक सभी को है।
सत चित आनंद रहत रस बारिधि में,
भाव वीथिकान छवि छावन छिती को है।
जगमग होत जोत जौहरी जगत माँहि,
हिन्दी हेम हार यै नगेन्द्र जगती कौ है।।[106]

इसी प्रकार ब्रजभाषा के लिए लिखा है। जिसमें प्रश्नों के द्वारा ब्रज की मिठास को व्यक्त किया है।

नजकेते कहैं पारसी आरसी, सद्रलिपी लिखौ होनी कहाँ?
अरबी पढ़े डोलें बने बरबी, गुजराती में सुढ़लौनी कहाँ?
बँघला समता करि हार गई, समता मसता के सु होनी कहा?
अंग्रेजी में तजी भले दरसै, ब्रजभाषा-सी है मिठलौनी कहाँ?[107]

जहाँ अलग-अलग भाषाओं से तुलनाकर ब्रजभाषा के महत्व को आधुनिक कवियों ने प्रस्तुत किया वही भूतपूर्व कवियों, उनकी रचनाओं कृष्ण की भूमि का महत्व बताते हुए भाषा के महत्व को रचा है विष्णु विराट जी ने अपनी रचना 'मोहि बीन के तारन में कसि लै' में कई कवित्तो के माध्यम से ब्रजभाषा के महत्व को दर्शाया है। जैसे सूर, रसखान, पदमाकर, भिखारी, घनानंद, मतिराम, ग्वाल और नवगीत जैसे कवियों की वाणी का महत्व और ब्रज भाषा को दर्शाया है। उदाहरण इस प्रकार है।

सूर संवारी सहूर की है, रसखान, रहीम की, ताज की बानी।
ये पदमाकर, तोष भिखारी घनानंद, वृन्द निवाज की बानी
यै मतिराम देव की, ग्वाल की, यै नवगीत के राज की बानी।
गोपिन के अधरन झरी, खड़ी यै ब्रज की, ब्रजराज की बानी।।[108]

भाषा ने जहां एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति के प्रति प्रेम, राष्ट्र को जागृत किया वही दूसरी ओर कुछ स्वार्थी लोगों ने अपने फायदे के लिए एक जाति को दूसरी जाति

के झगड़ा करना, धार्मिक सहिष्णुता की भावना जागृत की है।

'विराट' जी के एक दोहों में हमें यही भावना शब्दों के द्वारा रची हुई प्राप्त होती है। जिस में विराट जी ने स्वार्थी लोगों की प्रवृत्ति को बहुत ही सरल रुप में दर्शाया है। बानगी द्रष्टाव्य है।

'नर के भीतर स्वान है स्वान रहे गुर्राये।
रोटी रोटी को लड़ै, बोटी बोटी खांय॥'[109]

वही दूसरी ओर राई के पहाड़ बनाने वाली उक्ति को सार्थक करते पत्रकार और नेता की मिलीभगत को प्रस्तुत करते हुए व्यंग्य **ऋषिकेश चतुर्वेदी** लिखते हैं।

बैठते है ऊँचे बड़ी उनकी सबा में पूँछ,
लम्बी है पहुँच भय किसी से न खाते हैं।
निपट निःशक हो, कही भी कूद पड़ते है,
बल अपने का कल कौतुक दिखाते है।
खाते हैं कुलांच पग-पग पै उछलते हैं,
दाँत दिखलाते कभी आँख से डराते है
वानर है वानर? न पूछो इन्ही लक्षणो से,
नेता, अभिनेता पत्रकार कवि आते हैं।[110]

'कविरत्न गोविंद' जी मौन नही रहे उन्होंने भी समानता, राष्ट्रप्रेम, साम्यवाद, धार्मिक सहिष्णुता आदि जैसे विषयों पर भक्ति के साथ आधुनिकता के स्वर को अपनी भाषा के द्वारा व्यक्त किया। राजनीति के षडयंत्रों की पोल खोलते हुए लिखा है।

सासन में स्वच्छताई प्रथम अलिच्छित है,
हाकिम धनिक-पक्षपात सुनवाई हैं।
कुनबा परस्ती जातिवाद सम्प्रदायवाद,
हिन्दू सिख मुस्लिम औ पारसी ईसाई है।
ए तौ भय होत हूं भरयौ है भूरि भ्रष्टाचार,
दस्यू द्यत लंपट लुटाई, महँगाई है।
पाहि कै सुतंत्रता परे हैं परतंत्र पुनि
इधर गिरौ कूआ है, उधर गिरौ खाई है। [111]

* * *

बूढ़ा राजनेतन की मति सठियाई गई।
बनत अबेतन पै वेतन अटूट है।
पूँजी ही केवल पै अबल दुखियात सौ तो
कीनी चौधराहट ने राजनीति लूट है।
रैही तौ न आयौ ताहि गिरि ने दबायौ खूब,
झूठ कौ उटायौ पारी पारटी में फूट है।
पूँजीवादी अहमदावाद में विवादी जूरे,
भारत की जनता अटूट एक जूट है।[112]

आधुनिकता ने सामाजिक समस्याओं को जन्म दिया है। और कवियों ने इसे अपने शब्दों द्वारा रचकर लोगों का ध्यान इस ओर खिचां है। भौतिकता और आधुनिकता मानवजाति के लिए वरदान और अभिशाप भी साबित हुई है। मनुष्य के नजरियें को बदलने के लिए कवियों ने अलग-अलग तरह से शब्दों में चित्रत किया।

'शर्मनलाल अग्रवाल' ने भौतिक सभ्यता की भयंकरता और प्रदूषण की कल्पना कर कोसते हुए शहरीपन की सचाई को दिखाया है। उदाहरण इस प्रकार है।

'बिरछिन कटाये तव खेत लहराये फेर,
बेच-बेच खेतन को नगर बसाये है।
नगर न के बीच कल कारखाने जाल बिछे,
कारे-कारे धूम के बवण्डर उड़ाये है॥
सांस में उसासन में आंसुन की धार बहे,
शुद्ध जल पीवन को कण्ठ तरसाये है॥
शस्य श्यामला या ब्रज की बसुन्धरा में
नारे पर नारे बहें प्रान अकुलाये हैं॥'[113]

इसी प्रकार डॉ. विष्णु विराट जी ने दोहे के रुप में नवीन विषयों और तथ्यों को सरल किन्तु सशक्त भाषा में अभिव्यंजित किया है। जिस में प्रदूषण, शहरीपन, नशा, मँहगाई, झगड़ा आदि सम-समायिक विषयों के प्रति अपने भावों को प्रकट किया।

शहरीपन :

सांस सांस घुटवे लगी, लगैं न ताजी ब्यार।
अब पक्की दीवार में, खिड़की खोदो यार॥[114]

प्रदूषण :

धुआँ मसीनन कौ उठौ, नभ भ्यौ स्याह मलंग।
धरा धूँजती में धँसें, नर नारी विकलंग॥[115]

मंहगाई :

कुर्सी पै कुर्सी चढ़ी चढ़ौ चाम पै चाम।
या उधार के चाम कौ, कैसौ ऊँचौ दाम।[116]

वैज्ञानिकता के युग ने मानव को मशीन के रुप में ढ़ाल दिया है। खेतों की जगह ऊँची ईमारतें, नदियों की जगह नाले और हवा के मशीनो की गड़गड़ाहट और गाड़ियों के धुएँ ने ले ली है।तो दूसरी ओर वैज्ञानिक युग ने मनुष्य को कुछ अनोखी और लाभदायक वस्तुओं की भी अमानत दी। इन्हीं ब्रजभाषा के शब्दों में अपनी लेखनी द्वारा कहने की चेष्टा में अपनी लेखनी द्वारा कहने की चेष्टा की है। गोविन्द चतुर्वेदी जी ने वैज्ञानिक तकनीकी सुविधाओं का इस प्रकार वर्णन किया है।

'यातायात साधन समृद्ध श्रमदान आन,
अनुसंधान अनुधर्मनि विज्ञान के।
सुई सौं लगाई वायुयान लौ बनान सेतु,
साधन प्रमान भए नवनिर्मान के॥'[117]

इसी प्रकार डॉ. विष्णु विराट जी ने विज्ञान के बुरे प्रभाव को अपने शब्दों द्वारा व्यक्त करते हुए बम, बन्दूक के बुरे प्रभाव का वर्णन किया।

टैक-तौप-बन्दूक अरु, अणु-एंटम के ढ़ेर।
महाप्रलय के महूरत, साजे देर अबेर॥
धूँ-धूँ जरयौ हिरोसिमा, नागासाकी भस्म।
पूरी पारै जुरि, विध्वसन की रस्म॥[118]

आधुनिक युग के इस कवि ने यह सिद्ध कर दिया कि ब्रजभाषा में काव्य करने हेतु किसी पदवी की आवश्यकता नहीं होती किन्तु ब्रजभाषा के प्रति अपार आस्था ही

काव्य को नया रूप और नये विचार प्रदान करती है। काव्य का विषय चाहे किसी भी प्रांगण से गुजरे चाँद की तरह फिर भी वह हर एक क्षेत्र के आँगन में अपना प्रकाश पुंज फैलाता ही है अतः यह कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी कि ब्रजभाषा कवियों का साहित्य और काव्य का सृजन बहते हुए उन धारों की तरह है जो अपने आस-पास हो रहे विधिवत घटनाओं के उन्मूलन को अपने अन्दर समेटकर ब्रजभाषा काव्य के स्तर को एक नए आयाम तक पहँचाते हुए काव्य को एक नई दिशा प्रदान करने में समर्थ हैं।

इस प्रकार आधुनिक ब्रजभाषा कवियों के काव्य में हमें पंरम्परित और आधुनिक दोनों ही रूप देखने को मिलता है। राजस्थान के ब्रजभाषा कवियों के काव्य से अगर तुलना की जाय तो राजस्थान के कवियों ने भी परम्परा और आधुनिकता दोनों ही प्रकार के काव्यों की रचना की है।

जैसा कि हमने पूर्व अध्यायों में देखा कि भक्ति, शृंगार और आधुनिक सभी विषयों पर कवियों ने दोहे, छन्द, सवैया, कुण्डलियां, भजन और पैरोड़ी आदि की रचनाएँ रची। राजस्थान के ब्रजभाषा कवि और अन्य क्षेत्रिय ब्रजभाषा कवियों ने ब्रजभाषा के साहित्य कोश अनगिनत रचनाओं के द्वारा दिन प्रति दिन बढ़ाते जा रहे है। जो कि यह सिद्ध करता है कि ब्रजभाषा आज भी साहित्य के क्षेत्र में उन्नति के पथ पर अग्रसर है। जिसे राजस्थान के ब्रजभाषा कवियों और अन्य ब्रजभाषा कवियों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

***

सन्दर्भ सूची

1. समालोचनादर्श
2. नवीनोत्सग संग्रह पृ.सं.10
3. कविरत्न नवनीत जीवन और काव्य, सम्पादक : डॉ. नन्दलाल चतुर्वेदी, पृ सं.78
4. श्यामांगावयव भूषण, पृ सं.19
5. उद्धव-सनेह शतक - नवनीत कृत छं. 103 पृ.सं.42
6. पावस पचासा- पृ. 1 छं. 6
7. दे. प्रेमरत्न पृ.सं.8
8. मूर्ख शतक छं. 86, पृ.सं.18
9. मूर्ख शतक छ. 37,38, पृ.सं.9
10. कविरत्न नवनीतजी जीवन और काव्य, नन्दलाल चतुर्वेदी पृ.सं.132
11. स्फूट संग्रह छंद पृ.सं.503
12. स्फूट संग्रह पृ.सं.510
13. गोविन्द सागर, सम्पादक, अक्षयकुमार गोस्वामी, डॉ. विष्णु विराट
14. गोविन्द सागर, सम्पादक : अक्षयकुमार गोस्वामी, डॉ.विष्णु विराट, पृ.सं.1 सम्पादकीय से
15. आधुनिक ब्रजभाषा कवि और काव्य, लेखक, डॉ. मायाप्रकाश पाण्डे, पृ.सं.201
16. ब्रजमाधुर्य - डॉ. वागीशकुमार गोस्वामी पृ.सं.49
17. गोविन्द सागर, पृ.सं.168
18. महारास सर्ग-6, छंद 69
19. पुस्तकः ब्रजमाधुर्य, सम्पादक, डॉ. वागीशकुमार गोस्वामी, पृ. 27, 49
20. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 48
21. पुस्तकः ब्रजमाधुर्य, सम्पादक, डॉ वागीशकुमार गोस्वामी, पृ. 52
22. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 52
23. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 53
24. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 52
25. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 53
26. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 55
27. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 55
28. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 55
29. आधुनिक ब्रजभाषा काव्य, सं. डॉ. जगदीश वाजपेयी, पृ. सं. 98
30. पदम सिंह शर्मा के पत्र- बनारसीदास चतुर्वेदी, पृ स 522
31. रसकलस- अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध
32. आधुनिक ब्रजभाषा काव्य, डॉ. जगदीश गुप्त, पृ. सं. 96
33. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 96
34. ब्रज के आधुनिक कवियों के काव्य का समीक्षात्मक अध्ययन, डॉ. प्रेमदत्त मिश्र, पृ 49
35. ग्वाल कवि के पद- सं. राजेश दीक्षित, पृ. 50
36. नेट, वेबदुनिया डोट कोम, साहित्य
37. नेट, वेबदुनिया डोट कोम, साहित्य
38. नेट, वेबदुनिया डोट कोम, साहित्य
39. नेट, वेबदुनिया डोट कोम, साहित्य
40. हिन्दी साहित्य का उद्‌भव और विकास- डॉ. राम बहौरी शुक्ल, पृ. 169
41. आधुनिक ब्रजभाषा काव्य, डॉ. जगदीश वाजपेयी, पृ. सं. 87
42. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 86

43 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 86
44. नेट, वेबदुनिया डोट कोम, साहित्य
45. नेट, वेबदुनिया डोट कोम, साहित्य
46. आधुनिक ब्रजभाषा काव्य, डॉ. जगदीश वाजपेयी, पृ. 101
47. ब्रजभाषा के आधुनिक कवि, श्री रामनारायण अग्रवाल पृ. 988
48. आधुनिक ब्रजभाषा काव्य, डॉ. जगदीश वाजपेयी, पृ. 105
49. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 104
50. ब्रजभाषा के आधुनिक कवि, पोददार अभिनंदन ग्रंथ, पृ. 589
51. आधुनिक ब्रजभाषा काव्य, डॉ. जगदीश वाजपयी, पृ. सं. 229
52. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. स. 235
53. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 200
54 आधुनिक ब्रजभाषा काव्य, डॉ. जगदीश गुप्त, पृ. सं. 113
55. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 113
56. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 114
57. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 114
58. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 197
59. ब्रजमाधुर्य, डॉ. वागीश कुमार गोस्वामी, पृ. स. 58
60. आधुनिक ब्रजभाषा कवि और काव्य, सं. मायाप्रकाश पाण्डे, पृ, सं. 122
61. ब्रजमाधुर्य, डॉ. वागीशकुमार गोस्वामी, पृ. सं. 60
62. मोहि बीन के तारन में कसि लै, डॉ. विष्णु विराट
63. मोहि बीन के तारन में कसि लै, डॉ. विष्णु विराट
64. मोहि बीन के तारन में कसि लै, डॉ. विष्णु विराट
65. मोहि बीन के तारन में कसि लै, डॉ. विष्णु विराट
66. विराट सतसई, डॉ. विष्णु विराट पृ सं. 2
67. विराट सतसई, डॉ. विष्णु विराट पृ सं. 5
68 विराट सतसई, डॉ. विष्णु विराट पृ सं. 13
69. मोहि बीन के तारन में कसि लै, डॉ. विष्णु विराट
70. ब्रजमाधुर्य- डॉ. वागिश कुमार गोस्वामी, पृ. सं. 58
71. ब्रज के आधुनिक कवियों का तुलनात्मक अध्ययन, डॉ. प्रेमदत्त मिश्र, पृ. 76
72. ब्रज के आधुनिक कवियों का तुलनात्मक अध्ययन, डॉ. प्रेमदत्त मिश्र, पृ. 101
73. ब्रज के आधुनिक कवियों का तुलनात्मक अध्ययन, डॉ. प्रेमदत्त मिश्र, पृ. 101
74. ब्रजमाधुर्य- डॉ. वागिश कुमार गोस्वामी, पृ.सं. 46
75. ब्रजमाधुर्य- डॉ. वागिश कुमार गोस्वामी, पृ.सं. 55
76. मोहि बीन के तारन में कसि लै, डॉ. विष्णु विराट
77. ब्रजमाधुर्य- डॉ. वागिश कुमार गोस्वामी, पृ.सं. 52
78. आधुनिक ब्रजभाषा कवि और काव्य, डॉ. माया प्रकाश पाण्डे, पृ. सं. 56
79. ब्रज के आधुनिक कवियो के काव्य का समीक्षात्मक अध्ययन, डॉ. प्रेमदत्त मिश्र, पृ. स. 86
80. यमुना छप्पन भोग, पृ. 6
81. नेट, वेबदुनिया डोट कोम, साहित्य
82. मोहि बीन के तारन में कसि लै, डॉ. विष्णु विराट
83. पुस्तक : ब्रज से गंगा तक, जनार्दन याज्ञिक, पृ सं. 12
84. मोहि बीन के तारन में कसि लै, डॉ. विष्णु विराट
85. प्रीतम काव्य रसामृत, पं. अनिल शास्त्री चतुर्वेदी, पृ. 49
86. कमल सतसई, गोविन्द चतुर्वेदी, पृ. 5

87. आधुनिक ब्रजभाषा का समीक्षात्मक अध्ययन, डॉ प्रेमदत्त मिश्र, पृ सं. 72
88. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 150
89. कमल सतसई, गोविन्द चतुर्वेदी, पृ. 5
90 सनेह शतक, छ. 57, पृ. 23
91. ब्रजमाधुर्य-डॉ. वागीश कुमार गोस्वामी, पृ. सं. 52
92. मोंहि बीन के तारन में कसि ले, डॉ. विष्णु विराट
93. कमल सतसई, पृ. सं. 671
94. पुस्तक : ब्रज मार्धुय, सम्पादक, डॉ. वागीश कुमार गोस्वामी पृ. 55
95. आधुनिक ब्रजभाषा कवियों का समीक्षात्मक अध्ययन, डॉ. प्रेमदत्त मिश्र, पृ. सं. 113
96. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 107
97. बाँसुरी, डॉ. लक्ष्मी शंकर मिश्र, पृ. 67
98. गोविंद सागर, छन्द 369
99. पुस्तक : विराट सतसई, डॉ. विष्णु विराट पृ. सं. 19
100. पुस्तक : विराट सतसई, डॉ. विष्णु विराट पृ. सं. 79
101. पुस्तक : विराट सतसई, डॉ. विष्णु विराट पृ. सं. 37
102. आधुनिक ब्रजभाषा कवियो का समीक्षात्मक अध्ययन, डॉ. प्रेमदत्त मिश्र, पृ. 102
103. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 153
104. स्फूट संग्रह, पृ. सं. 503
105. गोविंद सागर, पृ. सं. 328
106. गोविंद सागर, पृ. सं. 327
107. गोविंद सागर, पृ. सं. 379
108. मोहि बीन के तारन मे कसि ले, डॉ. विष्णु विराट
109. विराट सतसई, डॉ. विष्णु विराट पृ. 18
110. विराट सतसई, डॉ. विष्णु विराट पृ. 18
111. गोविंद सागर, पृ. 369
112. गोविंद सागर, पृ. 370
113. आधुनिक ब्रजभाषा कवियों का समीक्षात्मक अध्ययन, डॉ. प्रेमदत्त मिश्र, पृ. स. 175
114. पुस्तक : विराट सतसई, डॉ. विष्णु विराट
115. पुस्तक : विराट सतसई, डॉ. विष्णु विराट
116. पुस्तक : विराट सतसई, डॉ. विष्णु विराट
117. कविरत्न गोविन्द चतुर्वेदी की डायरी, पृ. 5
118. पुस्तक : विराट सतसई, डॉ. विष्णु विराट

*